संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

ऋषि प्रसाद

मासिक पत्रिका

मूल्य : ₹ ६
भाषा : हिन्दी
प्रकाशन दिनांक : १ जनवरी २०१५
वर्ष : २४ अंक : ७
(निरंतर अंक : २६५)

आओ मनायें... मातृ-पितृ पूजन दिवस १४ फरवरी

"मैं तो चाहता हूँ सबका मंगल, सबका भला"
– पूज्य बापूजी

(पृष्ठ ४)

माता-पिता की परिक्रमा करते गणेशजी

पूजनीया श्री माँ महँगीबाजी की गोद में पूज्य संत श्री आशारामजी बापू

अपनी माँ के चरण छूते हुए यशस्वी, कर्मयोगी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

श्रवण कुमार

सामूहिक मातृ-पितृ पूजन कार्यक्रम

सर्वमान्य शास्त्र भगवद्गीता राष्ट्रीय ग्रंथ क्यों नहीं ?

"मैं चाहता हूँ कि गीता न केवल राष्ट्रीय शालाओं में बल्कि सभी शिक्षण संस्थाओं में पढ़ायी जाय। गीता से मैं शोक में भी मुस्कराने लगता हूँ।"

– महात्मा गांधी (पृष्ठ २२)
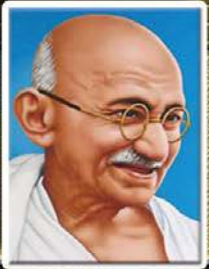
प्रत्येक हिन्दू बालक को संस्कृत सीखनी ही चाहिए।
– महात्मा गांधी (पृष्ठ २०)

संस्कृत सभी भाषाओं की जननी है।
– सर्वोच्च न्यायालय (पृष्ठ १८)

'तुलसी पूजन दिवस'

सुख, सौहार्द, स्वास्थ्य, शांति बढ़े और विश्वमानव का जीवन मंगलमय हो इस लोकहितकारी उद्देश्य से प्राणिमात्र के हितचिंतक पूज्य बापूजी द्वारा २५ दिसम्बर को **तुलसी पूजन दिवस** के रूप में मनाने का आवाहन किया गया। पूज्यश्री के आवाहन से प्रेरित हो देश-विदेश में यह पर्व व्यापक स्तर पर मनाया गया। (देखें आवरण पृष्ठ ३ व ४)

'भजन करो, भोजन करो, पैसा पाओ' योजना के अंतर्गत गरीबों में किया गया खजूर व गर्म कपड़ों का वितरण

सोलापुर (महा.)

लइड्रगाँव, जि. कालाहांडी (ओड़िशा)

मझगुवाँ, जि. सागर (म.प्र.)

श्रीपाली भाटेल (ओड़िशा)

गोरा खुर्द, जि. सागर (म.प्र.)

कंधकेलगाँव (ओड़िशा)

सिरसिल्ला (तेलंगाना)

दोंडाईचा (महा.)

नरेन्द्रकोण-जगन्नाथपुरी

प्रकाशा (महा.)

बलियापाड़ा-जगन्नाथपुरी

ढोराला, जि. उस्मानाबाद (महा.)

कोलकाता

अम्बाजी (गुज.)

आमेट (राज.)

जरूरतमंदों में हुए भंडारे तथा बाँटी गयी कम्बल व अन्य जीवनोपयोगी वस्तुएँ

पारसडोह, जि. बैतूल (म.प्र.)

लखनऊ

सुसनेर (म.प्र.)

ग्वालियर (म.प्र.)

अनगुल (ओड़िशा)

बल्लारपार, जि. नागपुर

गाजियाबाद (उ.प्र.)

पिल्लोनिगुड़ा, जि. रंगारेड्डी (तेलंगाना)

काशीपुर (उत्तराखंड)

सिरसागंज, जि. फिरोजाबाद (उ.प्र.)

कोटा-रायपुर (छ.ग.)

पंचेड़ (म.प्र.)

इंदौर (म.प्र.)

अकोला (महा.)

आमेट (राज.)

कोलकाता

'महिला उत्थान मंडल' द्वारा आयोजित शिविरों में सर्वांगीण विकास की कुंजियाँ प्राप्त करती महिलाएँ

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/sewa देखें।

आश्रम, समितियाँ एवं साधक परिवार अपने सेवाकार्यों की तस्वीरें sewa@ashram.org पर ई-मेल करें।

ऋषि प्रसाद

हिन्दी, गुजराती, मराठी, उड़िया, तेलुगू, कन्नड़, अंग्रेजी, सिंधी, सिंधी देवनागरी व बंगाली भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : २४ अंक : ७
भाषा : हिन्दी (निरंतर अंक : २६५)
प्रकाशन दिनांक : १ जनवरी २०१५
मूल्य : ₹ ६
पौष-माघवि.सं. २०७१

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक और मुद्रक :
श्री कौशिकभाई पो. वाणी
सम्पादक : श्री कौशिकभाई पो. वाणी
सहसम्पादक : डॉ. प्रे. खो. मकवाणा, श्रीनिवास
संरक्षक : श्री जमनालाल हलाटवाला
प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद -३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण स्थल : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.) - १७३०२५.

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित)

भारत में
(१) वार्षिक : ₹ ६०/-
(२) द्विवार्षिक : ₹ १००/-
(३) पंचवार्षिक : ₹ २२५/-
(४) आजीवन : ₹ ५००/-

नेपाल, भूटान व पाकिस्तान में (सभी भाषाएँ)
(१) वार्षिक : ₹ ३००/-
(२) द्विवार्षिक : ₹ ६००/-
(३) पंचवार्षिक : ₹ १५००/-

अन्य देशों में
(१) वार्षिक : US $ २०
(२) द्विवार्षिक : US $ ४०
(३) पंचवार्षिक : US $ ८०

ऋषि प्रसाद (अंग्रेजी)

	वार्षिक	द्विवार्षिक	पंचवार्षिक
भारत में	७०	१३५	३२५
अन्य देशों में	US $ 20	US $ 40	US $ 80

सम्पर्क
'ऋषि प्रसाद', संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुज.).
फोन : (०७९) २७५०५०१०-११, ३९८७७७८८.
e-mail: ashramindia@ashram.org
web-site: www.rishiprasad.org
www. ashram.org

ॐ ॐ इस अंक में ॐ ॐ

पूज्य बापूजी द्वारा विश्व-मांगल्य हेतु शुरू किया गया विश्वव्यापी अभियान

मैं तो चाहता हूँ : सबका मंगल, सबका भला

– पूज्य बापूजी

भारतीय संस्कृति से निखरती हैं योग्यताएँ

बालक गणेशजी अपनी सूझबूझ से शिव-पार्वतीजी से आशीर्वाद पाकर प्रथम पूजनीय हो गये । बालक-बालिकाओं में ऐसी योग्यताएँ छुपी हुई हैं । और इन बालक-बालिकाओं को 'आई लव यू' करवा के उनके रज-वीर्य का ह्रास करवाने की विदेशी साजिश के शिकार भारतवासी और विश्ववासी हो रहे हैं तो मेरे हृदय में अब क्या हुआ होगा... वह वाणी में नहीं आता । निर्दोष बच्चे बेचारे ! 'इन्नोसंटी रिपोर्ट कार्ड' के अनुसार २८ विकसित देशों में प्रतिवर्ष विद्यालय-महाविद्यालय में जानेवाली १३ से १९ साल की १२ लाख ५० हजार कन्याएँ गर्भवती हो जाती हैं। उनमें से ५ लाख कन्याएँ गर्भपात कराती हैं और ७ लाख ५० हजार कन्याएँ माँ बन के माँ-बाप या सरकार के ऊपर बोझा होकर दुःख की जिंदगी गुजार रही हैं।

मेरा ईसाइयों से विरोध नहीं है, मुसलमानों से विरोध नहीं है, पारसियों से विरोध नहीं है, मुझे तो साँप से भी विरोध नहीं है । साँप को उठाता हूँ तो साँप भी मेरे सामने प्यार से देखता है । मैं किसीके विरोध में काम नहीं करता हूँ लेकिन यह मानव-जाति के साथ अत्याचार हो रहा है।

लोग बोलते हैं 'विकास का युग, विकास का युग...' लेकिन मैं बोलता हूँ युवक-युवतियों के लिए विनाश का ऐसा युग इससे पहले कभी नहीं आया था ! न उनके पास खाने के लिए देशी घी है, न पीने के लिए देशी गाय का दूध है, न सत्शास्त्रों का ज्ञान है, न कुंडलिनी शक्ति जगानेवाली शिक्षा-दीक्षा है । वे बेचारे पोथे पढ़-पढ़कर बस गुलामी की भावना से प्रमाणपत्र पाने की दौड़ में अपनी सारी योग्यता खपा देते हैं और प्रमाणपत्र लेकर घूमते रहते हैं।

एक व्यक्ति मेरे पास आया। मैंने पूछा : ''क्या

करते हो ?''

बोले : ''एम.ए. कर लिया है।''

''कितना कमाते हो ?''

सिकुड़ गया, फिर बोला : ''४ हजार रुपये।''

इतने प्रमाणपत्रों के बाद भी अपनी माँ, पत्नी व बच्चों के लिए, अपने लिए खाने-पीने की व्यवस्था न कर सके... धिक्कार है उस पढ़ाई को !

दूसरा एक हैदराबाद का व्यक्ति मिला : ''बाबाजी ! मेरी बेटी को मैंने एम.बी.ए. कराया और जमाई भी एम.बी.ए. वाला ढूँढ़ा । ब्याज पर पैसा लेकर मैंने ४२ लाख रुपये शादी में खर्च किये। मेरी कन्या को ३० हजार और जमाई को ३५ हजार मासिक वेतन मिलता है । मेरी कन्या को ४ महीने का गर्भ है। जमाई लाकर उसे मेरे घर पर छोड़ गया, बोलता है : ''नहीं चाहिए।'' अब मैं कहाँ जाऊँ ? मैं तबाह हो गया । कन्या का गर्भपात कराता हूँ तो पाप का भागी होता हूँ और गर्भवती कन्या घर में रखता हूँ तो समाज में लानत पड़ती है ।''

एम.बी.ए. पढ़े हुए छोरे का पुरानी 'आई लव यू' वाली के प्रति आकर्षण फिर जाग्रत हो गया तो फेरे फिर के जिस कन्या से शादी की उसकी जिंदगी में तो छुरा भोंक दिया ! ऐसी पढ़ाई को धिक्कार है जो दो-दो कुटुम्बों को तबाह कर दे, खुद को तबाह कर दे ! पढ़े-लिखे तो हैं लेकिन वैदिक शिक्षण से रहित हैं, हिन्दू संस्कृति के ज्ञान से रहित हैं । अगर ऐसी पढ़ाई के साथ भारतीय संस्कृति न जुड़ी तो यह पढ़ाई शैतानी पढ़ाई हो जायेगी।

मैं तो चाहूँगा भारत के युवक-युवतियाँ तो माँ-बाप का आदर-पूजन करें लेकिन जो अंग्रेज बेचारे भटक गये हैं, वे भी अपने माता-पिता का आदर करें। विश्व के सभी लोग सुखी रहें, ईसाई भी सुखी रहें, मुसलमान भी सुखी रहें, पारसी भी सुखी रहें, यहूदी भी सुखी रहें, प्राणिमात्र सुखी रहे, मेरी तो ऐसी इच्छा है - सबका मंगल, सबका भला !

बस थोड़ा-सा जगाने की जरूरत है

१२ फरवरी २०१२ को राजिम कुम्भ (छ.ग.) में मेरे सत्संग में मुख्यमंत्री, शिक्षामंत्री और दूसरे मंत्री भी बैठे थे । मैंने बताया कि 'वेलेंटाइन डे' मनाने से ऐसी-ऐसी हानियाँ होती हैं और हमारे नौनिहालों, निर्दोष बच्चों के साथ अत्याचार हो रहा है। तो उन्होंने घोषणा कर दी कि 'छत्तीसगढ़ में १४ फरवरी को वेलेंटाइन डे नहीं, मातृ-पितृ पूजन दिवस मनाया जायेगा।'

मैंने कहा कि यह भारत की संस्कृति है, यहाँ थोड़ा-सा बस जगाने की जरूरत है । विश्व चाहता है, सभी चाहते हैं स्वस्थ, सुखी, सम्मानित जीवन। बुद्धि में भगवान का प्रकाश हो, मन में प्रभु का प्रेम व मानवता का प्रेम हो और इन्द्रियों में संयम हो बस, हो गया। आपका जीवन धनभागी हो जायेगा ! अपने पास खजाना है और यह खजाना विश्वात्मा की तरफ से सभीको मिले इसीलिए मैंने ९ साल से यह प्रयत्न शुरू किया हुआ है।

माता-पिता बच्चों को यह आशीर्वाद दें

बच्चे माता-पिता का पूजन करें, तिलक करें, प्रदक्षिणा करें और माँ-बाप बच्चों को तिलक करें

और हृदय से लगायें। गौधूलि का तिलक कार्य-साफल्य देता है। तुलसी की मिट्टी, चंदन, केसर, कुमकुम आदि का तिलक भी लाभ करता है। माता-पिता पूजन करनेवाली अपनी संतान के ललाट पर तिलक करते हुए कहें : ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ अश्मा भव। तू चट्टान की तरह अडिग रहना ! जरा-जरा बात में चिढ़ जाना, दुःखी हो जाना, रूठ जाना, घर से भाग जाना, गंदी फिल्म देखने चले जाना, गंदी दोस्ती में चले जाना - यह नीच विद्या है। इनके आगे तू चट्टान की नाईं अडिग रहना। फिर ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ परशुः भव। विघ्न-बाधाओं को, प्रतिकूलताओं को ज्ञान के कुल्हाड़े से, विवेक के कुल्हाड़े से काटनेवाला बन ! ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ हिरण्यमयस्त्वं भव। तू सुवर्ण के समान चमकनेवाला बनना मेरे लाल ! मेरी लाली !

माँ-बाप की शुभकामना बड़ा काम करती है। माता-पिता का आशीर्वाद जिन्होंने भी लिया है, वे बड़े ऊँचे-ऊँचे पद को प्राप्त हुए हैं। ऐसे कई व्यक्तियों को मैं जानता हूँ।

१४ फरवरी की सुबह करें शुभ संकल्प

बच्चों को १३ फरवरी को याद दिलायें और तैयारी रखें। १४ फरवरी की सुबह संकल्प करें कि 'आज मैं माता-पिता के अंदर छुपे हुए परमात्मदेव का प्रत्यक्ष पूजन करूँगा। सर्वतीर्थमयी माता... सारे तीर्थों की यात्रा का फल मिलता है माता की प्रसन्नता, माता का आदर करने से। सर्वदेवमयः पिता... सब देवताओं की पूजा का फल मिलता है पिता का आदर करने से। आज मैं माता-पिता का पूजन दिवस मनाऊँगा।' फिर और नहीं तो अपने बगीचे से ही चार फूल तोड़कर आ जाय। दीया तो घर में होगा ही। मात-पिता को तिलक कर मातृदेवो भव। पितृदेवो भव। बोल के थोड़ा मन में जैसी भी प्रार्थना, सद्भाव आये उस अनुसार करें अथवा तो 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' या 'माँ-बाप को भूलना नहीं' यह छोटी-सी पुस्तक आश्रम से प्रकाशित हुई है, इसके अनुसार विधिवत् मनायें। ('माँ-बाप को मत भूलना' डीवीडी में भी पूजन-विधि दी गयी है।)

और सब मिलेगा पर माँ-बाप नहीं मिलेंगे

और सब मिलेगा पर माँ-बाप नहीं मिलेंगे। कितना कष्ट सहकर जननी ने हमें जन्म दिया है और पिता ने कितनी तकलीफें उठाकर हमें पाला-पोसा, पढ़ाया-लिखाया और उनसे मुँह मोड़कर युवक-युवती 'आई लव यू', 'आई लव यू' करके एक-दूसरे को फूल दें, एक-दूसरे को काम की नजर से देखें तो जीवनीशक्ति का ह्रास होता है, दिल-दिमाग कमजोर हो जायेंगे, संतान कमजोर आयेगी।

युवक १४ फरवरी को फूल लेकर अपनी प्रेयसी के पास जाता है तो अपने माता-पिता का अपमान करता है। १४ फरवरी को फूल लेकर नहीं, दिल लेकर, पूजा की सामग्री लेकर माँ के चरणों में, पिता के चरणों में जाओ, जिससे तुम्हारा अंदर का हृदय-तीर्थ शुद्ध हो जाय। इससे माँ-बाप तो मेहरबान होंगे लेकिन माँ-बाप का जो अंतरात्मा है वह भी बरस जायेगा और बच्चे-बच्चियों, युवक-युवतियों की जिंदगी सँवर जायेगी।

गुरुकृपा से जीवन-परिवर्तन

- साध्वी रेखा बहन

२० साल पहले दिवाली के दिनों में शिविर भरने मेरी बड़ी बहनें उल्हासनगर से अहमदाबाद आ रही थीं तो मैं भी घूमने के बहाने आ गयी । आश्रम में बहुत भीड़ थी और मैंने पूज्य बापूजी को कभी प्रत्यक्ष नहीं देखा था । प्राणायाम, ॐकार का गुंजन आदि के लिए तो मुझे लगता था कि ये क्या करते हैं !

दिवाली का दूसरा दिन था । मैं नजदीक से दर्शन के लिए लाइन में लगी थी । मेरे हाथ में मावे (दूध का खोआ) का डिब्बा था, उस पर सिंधी में 'जयशंकर' लिखा हुआ था तो पूज्य बापूजी पढ़कर बोले : "उल्हासनगर से आयी है न ? माला करती है ?"

"साँईं ! माला तो बूढ़े लोग करते हैं ।"

"तो तुम... ?"

"जब बूढ़ी हो जाऊँगी, तब माला करूँगी ।"

बापूजी मुस्कराये और बोले : "अच्छा, जवान लोग मिठाई तो खाते हैं ?"

मैंने कहा : "हाँ, मिठाई तो खा लूँगी ।"

फिर बापूजी ने कहा : "तुम माला (गुरुमंत्र की) नहीं कर सकती तो सारस्वत्य मंत्र तो ले सकती हो ?"

"बापूजी ! उससे क्या होगा ?"

"बुद्धि बढ़ेगी, अच्छे अंकों से पास होगी ।"

"हाँ, यह मंत्र तो मैं ले सकती हूँ ।"

बापूजी ने मुझे ऐसे करके सारस्वत्य मंत्र की महिमा बतायी । अगले दिन मैंने सारस्वत्य मंत्र लिया । मंत्रदीक्षा के बाद बापूजी पंडाल में सबको नजदीक से दर्शन दे रहे थे । मुझे माला करते हुए देखा तो बापूजी ने पूछा : "क्यों, माला तो बूढ़े लोग करते हैं न ?"

मैंने कहा : "यह तो सारस्वत्य मंत्र है ।" फिर बापूजी आगे चल दिये ।

बाद में पता चलेगा...

बापूजी व्यासपीठ पर आकर बोले : "जिन्होंने दीक्षा ली है, मंत्र लिया है वे आगे आ सकते हैं ।"

परंतु मुझे लगी थी भूख, मैं नाश्ता करने आश्रम के बाहर चली गयी । मैं उधर गयी और इधर बापूजी ने पुछवाया कि "वह उल्हासनगरवाली बच्ची कहाँ गयी ?"

मैं स्टॉल पर पहुँची थी । वहाँ ३ बड़े-पाव खाये

और चाय पीकर आयी, फिर लाइन में लगी। जब मैं बापूजी के सामने आयी तो बापूजी ने सबसे पहले यही पूछा : ''सच बता, तू कहाँ गयी थी ?''

''मैं बाहर नाश्ता करने गयी थी।'' तब यह समझ नहीं थी कि यह गलत बात है।

''क्या खाया ?''

''३ बड़े-पाव खाये।''

''पच गया ?''

''जी, घर में तो ४-४ खाते हैं और ऊपर से लस्सी भी पीते हैं। कुछ नहीं होता।''

''अभी कुछ नहीं होगा, बाद में पता चलेगा।''

उस समय मुझे पूज्य बापूजी की बात समझ में नहीं आयी थी। कुछ वर्षों बाद जब मुझे हृदय की तकलीफ हुई, तब मुझे बापूजी की बात याद आयी।

बापूजी ने ज्ञान पाने का लक्ष्य दिया

फिर बापूजी ने पूछा : ''तुम आश्रम में खाना क्यों नहीं खाती हो ?''

मैंने कहा : ''बापूजी ! हमें होटलों में खाने की आदत है।''

''फिर ऐसे ही तुम रोज बाहर खाओगी ?''

''कल तो हम वैसे ही चले जायेंगे।''

''पर अब तुम बाहर नहीं खाना। तुम मैया (पूज्य बापूजी की धर्मपत्नी पूजनीया लक्ष्मी माताजी) के पास जाना, वे तुमको पापड़ वगैरह कुछ दे देंगी। उससे खा लोगी ?''

''पापड़ के साथ मैं खाना खा सकती हूँ।''

अगले दिन मैंने मैयाजी के पास जाकर प्रणाम किया और बोली : ''पूज्य बापूजी ने आपसे भोजन लेने के लिए कहा है और उसमें पापड़ जरूर दीजियेगा।'' मैयाजी ने मुस्कराते हुए पापड़ सिंकवाकर मुझे दिये।

ऐसी-ऐसी आदतों की मैं अधीन थी और माला बड़े-बुजुर्ग करते हैं ऐसी समझ मेरे दिमाग में थी पर बापूजी की कैसी कृपा... मैं कितना प्रणाम करूँ, कितना वंदन करूँ कि बुरी आदतें कब छूट गयीं यह तो पता भी नहीं चला, साथ ही बापूजी ने हमें आत्मज्ञान पाने का लक्ष्य दे दिया और उस मार्ग पर चला भी रहे हैं।

अल्पायु बदली दीर्घायु में

मैं जब ८ साल की थी तब मुझे हृदयरोग हुआ था तो पिताजी ने ऑपरेशन करवा दिया। डॉक्टरों ने कह दिया था कि यह बच्ची १३ से १५ साल और जीवित रहेगी। डॉक्टरों के अनुसार मेरी उम्र केवल २३ साल थी लेकिन मैं २१ साल की उम्र में आश्रम में आ गयी तो यहाँ के सात्त्विक वातावरण, खानपान, मंत्रजप व प्राणायाम तथा बापूजी की करुणा-कृपा से मैं आज ४० साल की उम्र होने पर भी जीवित हूँ और स्वस्थ हूँ।

गाँठ छूट जायेगी

६-७ साल पहले मैं बहुत बीमार पड़ गयी थी। डॉक्टर के कहने पर इकोकार्डियोग्राफी करवायी। रिपोर्ट देखकर डॉक्टरों ने मुझे कहा कि ''आप इसी समय भर्ती हो जाइये। आपके हृदय में रक्त की एक गाँठ बन चुकी है, ऑपरेशन करना होगा। नहीं तो वह गाँठ कभी भी छूट जायेगी और सिर, कंधे, घुटने आदि कहीं भी फँस जायेगी तो आपका बचना असम्भव हो जायेगा।'' मैं थोड़ी चिंता में पड़ गयी। फिर दूसरे ही क्षण मन से आवाज आयी कि ४ दिन बाद पूर्णिमा पर बापूजी अहमदाबाद आनेवाले हैं। गुरुदेव की जैसी आज्ञा होगी वैसा करूँगी। पूर्णिमा पर पूज्य बापूजी पधारे। दोपहर के सत्संग के बाद बापूजी के समक्ष जाकर प्रणाम किया तो बापूजी ने मुझसे पूछा : ''क्या है ?''

तो मेरी आँखों से आँसू आ गये। पूज्यश्री ने सिंधी भाषा में पूछा : ''रो क्यों रही है ?''

मैंने सारी बात बता दी। बापूजी मुस्कराते हुए बोले : ''क्या होगा ?'' मैंने कहा : ''बापूजी ! वे बोल रहे हैं कि गाँठ छूट जायेगी।''

(शेष पृष्ठ ९ पर)

पहले दिया हुआ बयान डर और भय से दिया था

– आरोप लगानेवाली महिला

आशारामजी बापू पर आरोप लगानेवाली सूरत की महिला ने गांधीनगर कोर्ट में एक अर्जी डालकर बताया कि उसने धारा १६४ के अंतर्गत पहले जो बयान दिया था वह डर और भय के कारण दिया था । अब वह १६४ के अंतर्गत दूसरा बयान देकर केस का सत्य उजागर करना चाहती है । **(संदर्भ : गुजरात समाचार)**

''बापू या अनुयायियों की तरफ से कोई दबाव नहीं''

'जी न्यूज' संवाददाता : ''आशारामजी बापू की तरफ से या उनके अनुयायियों की तरफ से अथवा कोई भी उनके जो शुभचिंतक हैं उनका आप पर कोई दबाव है ? क्या कोई धमकी दी जा रही है ? क्या कुछ ऐसी चीजें हैं जो आपको कानूनी कार्यवाही करने में बाधक बन रही हैं ?''

आरोप लगानेवाली महिला : ''नहीं-नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है। इतने समय से हमने केस किया है, ऐसा कुछ भी उन लोगों की ओर से हमारे ऊपर नहीं आया है। सच्चाई यह है कि मेरे दिल में, मेरे मन में जो बोझ है और मैंने पहले पुलिस को भी इसके बारे में बताया था कि 'मुझे मजिस्ट्रेट के सामने बयान देना है' लेकिन उन्होंने किसी कारणवश मना कर दिया तो फिर मुझे कोर्ट में जाना पड़ा। और जैसी लीगल प्रोसेस है उसी प्रोसेस में मैं लगी हुई हूँ। जो सच्चाई है, मुझे बतानी है। बाकी ऐसी कोई बात नहीं है कि मेरे ऊपर कोई दबाव है या मेरा परिवार परेशानी में है । मैं अपनी फैमिली के साथ हूँ । न ही किसीने हमको अगवा किया है जो अभी टीवी में बता रहे हैं और मैं कोई गायब नहीं हूँ और न ही मैं कोई परेशानी में हूँ।''

(पृष्ठ ८ का शेष) बापूजी बोले : ''कोई गाँठ है ही नहीं तो छूटेगी क्या ?''

सत्संग के दूसरे सत्र में बापूजी ने मुझे धर्मराज का मंत्र दिया और बोले : ''इसका जप करो, कुछ नहीं होगा। तुम्हें हृदयरोग है तो तुम 'आदित्यहृदय स्तोत्र' का पाठ किया करो।''

मैंने गुरुआज्ञा मानी और उस दिन से आज तक कभी मुझे डॉक्टर के पास नहीं जाना पड़ा।

'धर्मराज छू नहीं सकता !'

वर्ष २०११ में महाशिवरात्रि पर नासिक में बापूजी का सत्संग था । बापूजी मंच पर घूमते हुए दर्शन दे रहे थे। बापूजी ने मुझे आगे बुलाया और कहा : ''सबको अपना अनुभव बताओ।''

मैंने अपना अनुभव बताया । फिर नासिक के भरे पंडाल में बापूजी ने एक हाथ मेरे सिर पर और दूसरा हाथ अपनी मूँछों पर रख के कहा : ''मैं वचन देता हूँ, जब तक मैं नहीं कहूँगा तब तक रेखा को धर्मराज छू नहीं सकते ! जब मैं आज्ञा दूँगा ये तभी जायेगी।''

यह कैसी गुरुकृपा है ! मैंने तो ब्रह्मज्ञानी गुरुदेव की थोड़ी-सी आज्ञा मानी और पूज्य बापूजी ने तो मेरी अल्पायु को दीर्घायु कर दिया, संसार में भटकनेवाले जीव को परमात्मज्ञान का रस चखाकर परमात्मप्राप्ति की तरफ मोड़ दिया।

क्या पॉक्सो कानून में संशोधन जरूरी नहीं ?

बच्चों को सुरक्षित माहौल मुहैया कराने और बच्चों के साथ अपराध करनेवालों को सजा दिलाने के उद्देश्य से 'पॉक्सो' कानून बनाया गया था । परंतु सर्वोच्च न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता पवन शर्मा कहते हैं कि ''पॉक्सो कानून में दी गयी बच्चे की परिभाषा तथा शंका के आधार पर कार्यवाही करने की पुलिस की बाध्यता इस कानून के दुरुपयोग के खतरे को बढ़ा देता है ।'' इतना ही नहीं, बच्चे के यौन-शोषण की आशंका उसके अभिभावकों द्वारा जताये जाने पर कार्यवाही होना भी इस कानून की कमजोर कड़ी है ।

पटना उच्च न्यायालय के अधिवक्ता रविशेखर सिंह बताते हैं : ''पॉक्सो कानून का सबसे कमजोर पहलू इसमें दी गयी नाबालिग की परिभाषा है । धारा २(१)(डी) के अनुसार जिसकी उम्र १८ वर्ष से कम हो वह नाबालिग है । किसीकी उम्र किस तरह निर्धारित की जायेगी तथा वास्तविक उम्र के लिए कौन-से प्रमाणपत्र मान्य होंगे, इसके बारे में कोई प्रावधान नहीं है । ऐसे कई मामले सामने आये हैं, जिनमें एक ही लड़की के उम्रसंबंधी ३-४ अलग-अलग दस्तावेज पाये गये हैं । ऐसी स्थिति में वास्तविक उम्र का पता लगाने के लिए पुख्ता जाँच का प्रावधान होना चाहिए ।''

नाबालिगों को मोहरा बना के इस कानून का प्रयोग बदला लेने और स्वार्थसिद्धि के लिए होने लगा है, ऐसा कई अधिवक्ताओं का मानना है । दिल्ली का रहनेवाला रवि और उसके पड़ोस की लड़की - दोनों की शादी करने की बात लड़की के पिता को मालूम पड़ी तो उसने लड़की के बालिग होने पर भी रवि के खिलाफ पॉक्सो के तहत यौन-शोषण का मुकदमा दर्ज करा दिया । इस सदमे से रवि ने आत्महत्या कर ली ।

(विस्तृत खबर हेतु लिंक : http://goo.gl/m4r8Ak)

जोधपुर में ८वीं कक्षा की एक छात्रा ने अपनी चारित्रिक गलती को छुपाने के लिए गलती पकड़नेवाले पड़ोसी युवक पर पॉक्सो एक्ट के तहत मुकदमा दर्ज करा दिया था । लेकिन जाँच के दौरान लड़की ने बाद में सच्चाई स्वीकार की और बड़ी मुश्किलें सहने के बाद युवक निर्दोष साबित हुआ ।

(विस्तृत खबर हेतु लिंक : http://goo.gl/H0GEVH)

धारा २२ (२) के अनुसार अगर नाबालिग ने झूठा आरोप खुद लगाया है तो यह बात साबित होने पर भी उसे कोई सजा नहीं हो सकती । बालिग अपराधी जानते हैं कि किशोर अपराधी छूट जायेगा, अतः वे उन्हें अपराध में शामिल करते हैं या उनसे अपराध करवाते हैं ।

मीडिया विश्लेषक उत्पल कलाल कहते हैं : ''बच्चों व महिलाओं की सुरक्षा के लिए कानून जरूरी है परंतु आज झूठे आरोप लगाने के लिए किस प्रकार साजिश रचकर लड़कियों व महिलाओं को मोहरा बनाया जाता है, इसका ताजा उदाहरण है संत आशारामजी बापू को फँसाया जाना। शाहजहाँपुर (उ.प्र.) की आरोप लगानेवाली लड़की की सहेली का बयान देख सकते हैं। लड़की अपनी सहेली से कहती है कि 'मेरे से जैसा बुलवाते हैं, वैसा मैं बोलती हूँ।' मेडिकल रिपोर्ट व चिकित्सक के बयान दोनों से बलात्कार की पुष्टि नहीं हुई है। मामूली खरोंच के निशान भी नहीं पाये गये। सूरत केस में भी बापू पर आरोप लगानेवाली महिला ने मीडिया को बताया कि पहले दिया हुआ बयान डर और भय से दिया था, अब मैं सच्चाई बताना चाहती हूँ।''

अधिवक्ता रविशेखर सिंह कहते हैं : ''पॉक्सो व नये बलात्कार निरोधक कानून के प्रावधान काफी कड़े हैं। अतः यह जरूरी है कि किसी भी तरह की कार्यवाही करने से पहले पुलिस प्रत्येक आरोप की प्रथम दृष्ट्या जाँच करे और ठोस सबूत मिलने पर ही अभियुक्त के विरुद्ध कार्यवाही करे। सिर्फ आरोप के आधार पर किसीको गिरफ्तार करना व्यक्ति के मौलिक अधिकारों का गम्भीर उल्लंघन है।''

पॉक्सो व बलात्कार निरोधक कानून की खामियों को दूर करने से ही समाज के साथ न्याय हो पायेगा अन्यथा एक के बाद एक निर्दोष सजा भुगतने के लिए मजबूर होते रहेंगे। इसमें पुरुषों के साथ संबंधित बेशुमार महिलाएँ व बच्चे और रिश्ते-नातेदार भी पीड़ित हो रहे हैं। अतः बच्चों-महिलाओं की सुरक्षा तथा राष्ट्रहित में कार्यरत संस्थाएँ और जागरूक जनता सजग हों और इन कानूनों में आवश्यक संशोधन की माँग हो। **- श्री रवीश राय**

(पृष्ठ १७ से 'उसके जीवन में असम्भव कुछ नहीं है' का शेष) पार्वतीजी ने उपमन्यु के सिर पर अपना कृपापूर्ण वरदहस्त रखा : ''बेटा ! तुझे खीर खानी थी, दूध चाहिए था। अब तुझे जो भी चाहिए होगा, तेरे लिए कुछ असम्भव नहीं है।''

इस कथा से यह समझना है कि जिसके जीवन में संयम, व्रत, एकाग्रता और इष्ट के प्रति दृढ़ निष्ठा है, उसके जीवन में असम्भव कुछ नहीं है।

जिसके जीवन में दृढ़ता नहीं है, वह चाहे अभी कितना भी ऊँचा दिख रहा हो लेकिन वह सरक जायेगा। अपने सिद्धांत की दृढ़ता होनी चाहिए। अपनी उपासना, व्रत, नियम के लिए कुछ तो दृढ़ता होनी चाहिए।

ऋषि प्रसाद प्रश्नोत्तरी

नीचे दिये गये रिक्त स्थानों की पूर्ति करने के लिए इस अंक को ध्यानपूर्वक पढ़िये। उत्तर अगले अंक में प्रकाशित किये जायेंगे।

(१) .... को 'देशिक' भी कहा जाता है।
(२) .... का ज्ञान सभी भारतवासियों को होना ही चाहिए।
(३) जिसके जीवन में .... नहीं है, वह चाहे अभी कितना भी ऊँचा दिख रहा हो लेकिन वह सरक जायेगा।
(४) हर नागरिक का कर्तव्य है कि वह .... के आदर्शों पर अमल करे।
(५) लगातार नाम-स्मरण करते रहेंगे तो .... कम होती जायेगी।

पिछले अंक की 'ऋषि प्रसाद प्रश्नोत्तरी' के उत्तर

(१) मकर संक्रांति (२) ज्ञान (३) असफलता (४) गाय का कत्ल

सबके प्रेरणास्रोत बापूजी ! आ जाओ...

(निर्दोष पूज्य बापूजी की शीघ्र रिहाई के लिए जंतर-मंतर, दिल्ली में हजारों साधक जप-पाठ, हवन व प्रार्थना के साथ व्रत, उपवास करते हुए तथा भीषण गर्मी और कड़कड़ाती ठंड आदि सभी प्रतिकूलताएँ सहते हुए पिछले १६ महीनों से धरने पर निरंतर डटे हुए हैं। भारत के इतिहास में न्याय पाने के लिए इतना प्रदीर्घ धरना सम्भवतः पहली ही बार देना पड़ा हो। धरने पर बैठे सत्याग्रहियों द्वारा बापूजी को भेजा गया पत्र :)

पूज्य बापूजी के श्रीचरणों में कोटि-कोटि प्रणाम !

बापूजी ! आज जंतर-मंतर, दिल्ली में हमारे धरने का ५०१वाँ दिन है। इस समय संसद का शीतकालीन सत्र चल रहा है, जिससे हजारों की संख्या में देश के विभिन्न राज्यों के लोगों का यहाँ आना-जाना लगा रहता है। यहाँ का वातावरण एक दिव्य मंदिर जैसा बन गया है। जो बापूजी को पहले नहीं मानते थे, ऐसे लोग भी अब सिर झुकाकर प्रणाम करके जाने लगे हैं। यहाँ तक कि बाहर से आनेवाले कुछ लोग तो आरती के बाद प्रसाद भी लेकर जाते हैं। किसीका कहना है कि हमारे व्यसन छूट गये, किसीका कहना है कि उसको नौकरी लग गयी और ऐसे अनेक लोग हैं जिनकी मनोकामनाएँ पूरी हो गयीं।

बड़े-बड़े अफसरों-अधिकारियों का कहना है कि भीतरी तौर पर हम जानते हैं कि बापूजी निर्दोष हैं। एक दिन सत्य की जीत अवश्य होगी।

बापूजी ! हमें जंतर-मंतर में आपकी उपस्थिति का एहसास हमेशा ऐसे रहता है जैसे आप हमें निहार रहे हों, प्रोत्साहित कर रहे हों। आरती के समय तो लगता है जैसे आप यहाँ सबके बीच से निकल रहे हों और अपने करकमल हमारे सिर पर रखकर आशीर्वाद दे रहे हों। विपरीत परिस्थितियों में भी आपकी कृपा हमारी रक्षा कर रही है।

बापूजी ! आप ही हमारे माता-पिता, बंधु, सखा, प्राणों के आधार... सब कुछ हो। आप साक्षात् परब्रह्म परमेश्वर हैं, इसका भी आपने हमें अनुभव करा दिया है। जैसे अर्जुन भगवान के विश्वरूप दर्शन करने के बाद उनको पुनः पूर्व रूप में आने का आग्रह करने लगा, वैसे ही हम सब आपके बच्चे आपके उसी (व्यासपीठ पर बैठे हुए) रूप के दर्शन और सत्संग का अनुग्रह चाहते हैं। हम सभी जंतर-मंतर पर आपके प्रत्यक्ष आगमन की प्रतीक्षा कर रहे हैं। हम सबके प्रेरणास्रोत बापूजी ! आ जाओ...

- जंतर-मंतर, दिल्ली में धरने पर बैठे सभी साधकों-भक्तों की ओर से श्री विजय साहनी, अधिवक्ता

चार स्थान जहाँ पर सांसारिक बातें हैं वर्जित

- पूज्य बापूजी

चार जगहों पर सांसारिक बातें नहीं करनी चाहिए, केवल भगवत्स्मरण ही करना चाहिए। ये चार स्थान हैं : **(१) श्मशान (२) रोगी के पास (३) मंदिर (४) गुरु-निवास।**

श्मशान में कभी गये तो 'तुम्हारा क्या हाल है ? आजकल धंधा कैसा चल रहा है ? सरकार का ऐसा है...' ऐसी इधर-उधर की बातें न करें वरन् अपने मन को समझायें कि 'आज इसका शरीर आया, देर-सवेर यह शरीर भी ऐसे ही आयेगा। इसको 'मैं-मैं' मत मान, जहाँ से 'मैं-मैं' की शक्ति आती है वही मेरा है। प्रभु ! तू ही तू... तू ही तू... मैं तेरा, तू मेरा। अरे मन ! इधर-उधर की बातें मत कर। देख, वह शव जल रहा है, कभी यह शरीर भी जल जायेगा।' इस प्रकार मन को सीख दें।

अगर श्मशान में जाने को न मिले तो आश्रम द्वारा प्रकाशित 'ईश्वर की ओर' पुस्तक सभी बार-बार पढ़ें। उससे भी मन विवेक-वैराग्य से सम्पन्न होने लगेगा।

रोगी से मिलने जाओ तब भी संसार की बातें नहीं करनी चाहिए। रोगी से मिलते समय उसको ढाढ़स बँधाओ। उसको कहो : 'रोग तुम्हारे शरीर को है। शरीर तो कभी रोगी, कभी स्वस्थ होता है लेकिन तुम तो भगवान के सपूत, अमर आत्मा हो। एक दिन यह शरीर नहीं रहेगा फिर भी तुम रहोगे, तुम तो ऐसे हो।' इस प्रकार रोगी में भगवद्भाव की बातें भरें तो आपका रोगी से मिलना भी भगवान की भक्ति हो जायेगा। रोगी के अंदर बैठा हुआ परमात्मा आप पर संतुष्ट होगा और आपके दिल में बैठा हुआ वह रब भी आप पर संतुष्ट होगा।

अगर आप मंदिर या गुरु-आश्रम में जाते हो तो वहाँ पर भी सांसारिक चर्चा न करो, इधर-उधर की बातें छोड़ दो। वहाँ तो ऐसे रहो कि एक-दूसरे को पहचानते ही नहीं और पहचानते भी हो तो रब के नाते। अन्यथा भगवान और गुरु का नाता तो ठंडा हो जाता है और पहचान बढ़ जाती है कि 'आप मेरे घर आइये, आप यह करिये - आप वह करिये, जरा ध्यान रखना, उसका लड़का ठीक है, अपने ही हैं...' मंदिर-आश्रम में जाकर भगवद्भाव जगाना होता है, संसार को भूलना होता है। अगर वहाँ जाकर भी संसार की बातें करोगे तो मुक्ति कहाँ पाओगे ? दुःखों से विनिर्मुक्त कहाँ होओगे ? इसलिए मुक्ति के रास्ते को गंदा मत करो वरन् गंदे रास्तों को भी भगवद्भक्ति से सँवार लो।

अगर गुरु के निवास पर जाते हो, गुरु के निकट जाते हो तब भी सांसारिक बातों को महत्त्व न दो। गुरु को निर्दोष निगाहों से, प्रेमभरी निगाहों से, भगवद्भाव की निगाहों से देखो और उन्हें संसार की छोटी-छोटी समस्या सुनाकर उनका दिव्य खजाना पाने से वंचित न रहो। उनके पास से तो वह चीज मिलती है जो करोड़ों जन्मों में करोड़ों माता-पिताओं से भी नहीं मिली। ऐसे गुरु मिले हैं तो फिर संसार के छोटे-मोटे खिलौनों की बात नहीं करनी चाहिए।

इस प्रकार चार जगहों पर सांसारिक चर्चा से बचकर भगवच्चर्चा, भगवत्सुमिरन करें। मंदिर एवं संतद्वार पर जप-ध्यान करें तो आपके लिए मुक्ति का पथ प्रशस्त हो जायेगा।

आत्मशिव की उपासना का महापर्व

हर मास आनेवाली मासिक शिवरात्रि मनानेवाले मनाते हैं लेकिन वर्ष में एक शिवरात्रि आती है जिसको 'महाशिवरात्रि' कहते हैं। पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश - यह प्रकृति है। इससे परे जो परमात्मा है उसमें यह जीवात्मा विश्रांति पाये, उस पूजा-विधि की व्यवस्था और वह पूजन विशेष रूप से फले ऐसा दिन ऋषियों ने खोजा और वह दिन है महाशिवरात्रि।

'शिव' शब्द का तात्त्विक अर्थ

'शिव' माना कल्याणस्वरूप, मंगलस्वरूप । 'शिव' शब्द प्राणिमात्र का अधिष्ठानस्वरूप है । हम श्वास में ऑक्सीजन लेते हैं और उच्छ्वास में कार्बन डाइऑक्साइड छोड़ते हैं, उसका शुद्धीकरण कौन कर रहा है ? दिन-रात हमारे शरीर से विषैले परमाणु निकल रहे हैं, उस विष को हमारे लिए कौन बदलता है ? वह व्यापक सच्चिदानंद चैतन्य तत्त्व ! नदियाँ कचरा लेकर सागर में जाती हैं और वह सागर चलते-चलते उन सारे कीटाणुओं को, सारे कचरे को अपनी-अपनी जगह पर सेट करके फिर उसी जल से उभरता है और (बरसात के द्वारा) गंगा, यमुना होकर पवित्र जल बहता है । पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश के कण-कण में, अणु-अणु में जो सत्ता काम कर रही है वह शिव की अव्यक्त सत्ता, शिव का अव्यक्त स्वरूप है और जब उस अव्यक्त सत्ता और अव्यक्त स्वरूप में कोई भक्त साकार रूप की दृढ़ भावना करके पूजा-आराधना करता है तो अव्यक्त में से व्यक्त होने में उस शिव को देर नहीं लगती है।

महाशिवरात्रि का तात्त्विक मर्म

जिसमें सारा जगत शयन करता है, जो विकाररहित है, उस (परम सत्ता) का नाम 'शिव' है। 'रात्रि' मतलब आरामदायिनी, सुखदायिनी, शांतिदायिनी अवस्था । शिवस्वरूप में सुख देनेवाली यह महाशिवरात्रि है।

या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी।
यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः ॥ (गीता : २.६९)

सम्पूर्ण प्राणियों के लिए जो रात्रि के समान है, उस नित्य ज्ञानस्वरूप परमानंद की प्राप्ति में स्थितप्रज्ञ

योगी जागता है और जिस भोग-संग्रह आदि में सभी प्राणी जागते हैं, तत्त्वज्ञानी महापुरुष की दृष्टि में वह रात है। जिन ईंट, चूने, लोहे, लक्कड़ की चीजों में, मेरे-तेरे में, इसमें-उसमें कुछ भी करके मजा लेने में लोग लगे रहते हैं, वह मुनीश्वरों की दृष्टि से अंधकार है और जिस अंधकारमयी महारात्रि, अहोरात्रि को बुद्धिमान साधक जागते हैं, वह मुनीश्वरों की शिवरात्रि है।उपवास का वास्तविक स्वरूप

शिवरात्रि तपस्या का पर्व है । भगवान शिव कहते हैं कि मैं स्नान से, वस्त्र-अलंकार, धूप-दीप, पुष्प और फल-फूल अर्पण करने से भी इतना प्रसन्न नहीं होता हूँ जितना महाशिवरात्रि के उपवास से मैं प्रसन्न होता हूँ। अपने आत्मा के समीप जाने की जो व्यवस्था या कार्यक्रम है, उसको बोलते हैं 'उपवास'। जप-ध्यान, स्नान, कथा-श्रवण आदि पवित्र सद्गुणों के साथ हमारी वृत्ति का वास यही उत्तम उपवास है।

दूसरा अर्थ यह भी है कि हम उपवास करें तो हम अन्न न खायें। इससे क्या होगा कि अन्नादि जो रोज खाते हैं, उसको पचाने के लिए जीवनीशक्ति लगती है, उस दिन उसको आराम मिलेगा । मन और प्राण ऊपर के केन्द्रों में आयेंगे। जो बहुत दुर्बल हैं, जिनको शारीरिक रोग है, ऐसे लोग उपवास में भले फलाहार आदि करें लेकिन कमजोर व्यक्ति हो, चाहे मजबूत व्यक्ति हो सभी भगवान के साथ अपने चित्त का वास बनाने की भावना करें और भगवद्भाव में रहें तो उनका उपवास सार्थक हो जाता है । ऐसा उपवास तो सबको करना चाहिए। यदि इस दिन 'बं-बं' बीजमंत्र का सवा लाख जप किया जाय तो जोड़ों के दर्द एवं वायुसंबंधी रोगों में लाभ होता है और भगवान शिव की प्रसन्नता प्राप्त होती है।

सुबह शुभ संकल्प करें

मनुष्य-जीवन के महान लक्ष्य की प्राप्ति के लिए यह शिवरात्रि बहुत सहायक है । इसलिए यह शिवरात्रि महाशिवरात्रि कही गयी है।

महाशिवरात्रि की सुबह उठते समय बिस्तर पर ही संकल्प कर लेना कि 'हे प्राणिमात्र के आधार ! हे सर्वाधार ! हे भगवान साम्बसदाशिव ! आज का दिन मैं उपवास और मौन धारण करके तुम्हारा चिंतन करते-करते तुम्हारे स्वरूप में, जो मेरे आत्मरूप में तुम विराजमान हो उसमें अधिक-से-अधिक विश्रांति पाऊँगा। शिवरात्रि के एक दिन की मेरी पूजा वर्षभर की पूजा का फल देनेवाली हो।' विष्णुजी या अन्य देवता का उपासक क्यों न हो लेकिन जिसने महाशिवरात्रि का लाभ नहीं लिया उसको परम लाभ की प्राप्ति जल्दी नहीं होती है। 'मुझे परम लाभ की प्राप्ति करनी है। हे देव ! हे महाकाल ! इस कालचक्र से बचने के लिए मैं तुम्हारी शरण आ रहा हूँ। शिवं शरणं गच्छामि। आज का दिन मेरा महापूजा का दिन हो।'

ऐसा संकल्प करके बिस्तर से उठना चाहिए और नहा-धोकर शिव-पूजन करें, ध्यान करें, जप करें, मौन रहें, रात्रि-जागरण करें।

महाशिवरात्रि का उत्तम पूजन

महाशिवरात्रि की आराधना का एक तरीका यह है कि पत्र, पुष्प, पंचामृत, बिल्वपत्रादि से ४ प्रहर पूजा की जाय। दूसरा तरीका है कि मानसिक पूजा की जाय। इस रात्रि को तुम ऐसी जगह पसंद कर लो जहाँ तुम अकेले बैठ सको, अकेले टहल सको। फिर तुम शिवजी की मानसिक पूजा करो । उसके बाद अपनी वृत्तियों को निहारो, अपने चित्त की दशा को निहारो। चित्त में जो-जो आ रहा है और जो-जो जा

रहा है, उस आने-जाने को निहारते-निहारते आने-जाने की मध्यावस्था को जान लो। उसे तुम 'मैं' रूप में स्वीकार कर लो, उसमें टिक जाओ।

तीसरा तरीका है कि जीभ न ऊपर हो न नीचे हो बल्कि तालू के मध्य में हो और जिह्वा पर ही आपकी चित्तवृत्ति स्थिर हो। इससे भी मन शांत हो जायेगा और शांत मन में शांत शिवतत्त्व का साक्षात्कार करने की क्षमता प्रकट होने लगेगी। महाशिवरात्रि का यह भी उत्तम पूजन है।

साधक कोई भी एक तरीका अपनाकर शिवतत्त्व में जगने का यत्न कर सकता है।

महाशिवरात्रि का उत्तम जागरण

इस रात्रि में जागरण करते हुए 'ॐ... नमः... शिवाय...' इस प्रकार प्लुत उच्चारण कर शांत होते जायें, ॐ... नमः शिवाय जप करें। मशीन की नाईं जप, पूजा न करें, जप में जल्दबाजी न हो। बीच-बीच में आत्मविश्रांति मिलती जाय। इसका बड़ा हितकारी प्रभाव, अद्भुत लाभ होता है। साथ ही अनुकूल की चाह न करना और विपरीत परिस्थिति से भागना-घबराना नहीं। यह भी परम पद में प्रतिष्ठित होने का हितकारी तरीका है। महाशिवरात्रि को भक्तिभावपूर्वक रात्रि-जागरण करना चाहिए। 'जागरण' का मतलब है जागना अर्थात् अनुकूलता-प्रतिकूलता में न बहना, बदलनेवाले शरीर-संसार में रहते हुए अबदल आत्मशिव में जागना। मनुष्य-जन्म कहीं विषय-विकारों में बरबाद न हो जाय बल्कि अपने लक्ष्य परमात्म-तत्त्व, सच्चिदानंदस्वरूप (सत् - जो सदा रहता है, चित् - जो ज्ञानस्वरूप है और आनंद - जो आनंदस्वरूप है) को पाने में ही लगे - इस प्रकार की विवेक-बुद्धि से अगर आप जागते हो तो वह शिवरात्रि का 'जागरण' हो जाता है। इस जागरण से आपके कई जन्मों के पाप-ताप, वासनाएँ क्षीण होने लगती हैं तथा बुद्धि शुद्ध होने लगती है एवं जीव शिवत्व में जागने के पथ पर अग्रसर होने लगता है।

इन तिथियों का लाभ लेना न भूलें

२४ जनवरी : वसंत पंचमी, सरस्वती पूजा (इस दिन माँ सरस्वती के साथ पुस्तक व लेखनी (कलम) की पूजा करनी चाहिए। सारस्वत्य मंत्र का अधिक-से-अधिक जप करना चाहिए।)

२६ जनवरी : अचला सप्तमी (माघ शुक्ल सप्तमी को स्नान, व्रत करके गुरु का पूजन करनेवाला सम्पूर्ण माघ मास के स्नान का फल व वर्षभर के रविवार व्रत का पुण्य पा लेता है। इससे सम्पूर्ण पापों का नाश व सुख-सौभाग्य की वृद्धि होती है।)

३० जनवरी : जया एकादशी (ब्रह्महत्या जैसे पाप एवं पिशाचत्व का विनाश करनेवाला तथा भोग और मोक्ष प्रदान करनेवाला व्रत। इसके व्रती को कभी प्रेतयोनि में नहीं जाना पड़ता।)

१३ फरवरी : विष्णुपदी संक्रांति (पुण्यकाल : सूर्योदय से सुबह ८-२८ तक)

१४ फरवरी : मातृ-पितृ पूजन दिवस

१७ फरवरी : महाशिवरात्रि व्रत, रात्रि-जागरण, शिव-पूजन (निशीथकाल : रात्रि १२-२७ से १-१७ तक), (प्रहर :- प्रथम : शाम ६-३८ से, द्वितीय : रात्रि ९-४५ से, तृतीय : मध्यरात्रि १२-५३ से, चतुर्थ : १८ फरवरी प्रातः ४-०० से)

उसके जीवन में असम्भव कुछ नहीं है

- पूज्य बापूजी

पुराणों में एक कथा आती है कि उपमन्यु माँ से दूध माँगता है और तपस्विनी माँ बीजों को पीसकर पानी में घोल के उसे दे देती है कि ''बेटा ! ले दूध।''

अब वह ननिहाल में गाय का दूध पीकर आया था, पहचान गया। बोला : ''माँ ! यह असली दूध नहीं है।''

''बेटा ! हम तपस्वियों के पास गाय नहीं है, धन नहीं है। हमारे पास दूध कहाँ ? अगर दूध पीना है और खीर खानी है तो सृष्टि के जो मूल कारण हैं भगवान साम्बसदाशिव, सच्चिदानंद शिव, उनकी तू आराधना कर। वे तेरी सारी मनोकामनाएँ पूर्ण करेंगे।''

''शिवजी की पूजा कैसे करें ?''

''बेटा ! मन को लगाना है, 'नमः शिवाय।' मंत्र जपना है।''

उपमन्यु हिमालय में जाकर उपासना करने लगा। उपासना करते-करते उसका चित्त उपवास में पहुँचा अर्थात् जिनकी उपासना कर रहा था उनके समीप उसका चित्त पहुँचा। शिवजी ने उसकी परीक्षा हेतु नंदी को ऐरावत के रूप में बदल दिया और स्वयं इन्द्र का रूप धारण कर उसके पास प्रकट हुए। उपमन्यु ने आवभगत की : ''इन्द्रदेव ! आपका स्वागत है ! बड़ी कृपा की इस बालक को दर्शन दिया।''

इन्द्ररूपधारी शिवजी ने कहा : ''जो तुझे माँगना है माँग ले, मैं तुझ पर प्रसन्न हूँ।''

''आप प्रसन्न हैं तो अच्छा है लेकिन मुझे आपसे कुछ नहीं चाहिए। मेरे इष्ट तो शिवजी हैं, मुझे तो उनके ही दर्शन करने हैं।''

शिवजी के चित्त में हुआ कि यह उपासक दृढ़ है। चलो, इसकी थोड़ी और परीक्षा लें। अपने मुँह से इन्द्ररूपधारी भगवान शिव स्वयं अपनी निंदा करने लगे। उपासक को अपने इष्ट के प्रति, अपने साधन के प्रति कैसा दृढ़ रहना चाहिए, यह उपमन्यु की कथा से हमको सीखने को मिलता है। हैं तो देवेन्द्र, ऐरावत पर आये हैं, वरदान माँगने को कह रहे हैं परंतु उपमन्यु कहता है : ''वरदान हम नहीं लेते, हम तो शिवजी के भक्त हैं और शिवजी की भक्ति में ही रहेंगे।'' कैसा है व्रत उसका ! कैसी है दृढ़ता !!

उपमन्यु प्रलोभन से प्रभावित नहीं हुए और शिवजी की निंदा उनको अच्छी नहीं लगी। उन्होंने अघोरास्त्र से अभिमंत्रित भस्म इन्द्र पर फेंका। मंत्र की शक्ति कैसी रही होगी ! नंदी ने अघोरास्त्र को बीच में पकड़ लिया। भगवान शिव भीतर से प्रसन्न हुए कि यह इन्द्र के साथ युद्ध करने को तैयार हो गया है। इन्द्र को भस्म करने को तैयार है लेकिन मेरी भक्ति छोड़ने की इसकी रुचि नहीं है। फिर उपमन्यु ने स्वयं को भस्म करने के लिए अग्नि की धारणा की परंतु शिवजी ने उसकी धारणा को शांत कर दिया। शिवजी अपने असली रूप में प्रकट हुए और ऐरावत की जगह पर नंदी प्रकट हो गया। उपमन्यु ने भगवान की यह लीला देखकर उनसे क्षमा-याचना की लेकिन भगवान कहते हैं : ''इसमें तेरा कसूर नहीं है, मैं तो तेरी परीक्षा ले रहा था कि तेरे जीवन में व्रत कैसा है, दृढ़ता कैसी है। पुत्र ! तू दृढ़व्रतधारी है। मैं तुझ पर प्रसन्न हूँ।''

शिवजी ने उपमन्यु का हाथ पकड़ के माँ पार्वती के हाथ में दिया। (शेष पृष्ठ ११ पर)
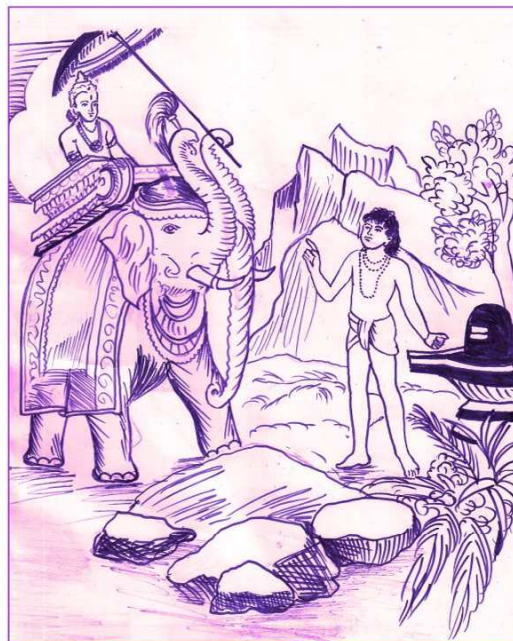
बापूजी जल्दी बाहर आयें

(तर्ज - ॐ जय जगदीश हरे...)

ॐ ॐ ॐ बापू जल्दी बाहर आयें।
बापू जल्दी बाहर आयें।
ये संकल्प हमारा-२,
जल्दी दरश दिखायें।
बापू जल्दी बाहर आयें ॥
भक्तों के लिए तुमने कितने कष्ट सहे।
बापू कितने कष्ट सहे।
जब-जब तुम्हें पुकारा-२,
दौड़े चले आये।
बापू जल्दी बाहर आयें ॥
मात-पिता हम सबके,
बंधु-सखा तुम्हीं।
बापू बंधु-सखा तुम्हीं।
तुम बिन कौन हमारा-२, विनती सुन लो मेरी।
बापू जल्दी बाहर आयें ॥
ज्ञान भक्तिमय अमृत
आपने हमको दिया।
बापू आपने हमको दिया।
निंदा-अपयश जैसे-२,
विष को स्वयं पिया।
बापू जल्दी बाहर आयें ॥
संस्कृति रक्षा हेतु, है अवतार लिया।
बापू ने अवतार लिया।
दोषरहित होकर भी-२,
बँधा स्वीकार किया।
बापू जल्दी बाहर आयें ॥
करुणा सागर गुरुवर लीला कर ये रहे।
बापू लीला कर ये रहे।
अंतर्यामी होकर-२, सब कुछ देख रहे।
बापू जल्दी बाहर आयें ॥
तुमसे हम हैं बापू और न कोई जग में।
बापू और न कोई जग में।
तुम ही दूर हुए तो-२, जायें कहाँ बच्चे ?
बापू जल्दी बाहर आयें ॥
भक्त पुकारें बापू !
अब तो दरश दिखाओ।
बापू अब तो दरश दिखाओ।
राह निहारें हम सब-२, अब ना देर करो।
बापू जल्दी बाहर आओ ॥
ॐ ॐ ॐ बापू जल्दी बाहर आयें।...

(पृष्ठ ५ से 'आप अपने साथ ...' का शेष) से परिपूर्ण हो उसका नाम संत है । जो बाह्य वस्तुओं से अपने में महत्त्व का आरोप करते हैं, वे संत नहीं हैं । जो महानतम ब्रह्म से एक होकर बैठा है वही महानतम है । जिसकी निर्विशेष ब्रह्मदृष्टि है वह संत है । ऐसे गुरु के पास जाकर उनके शरणापन्न हो के, उनको बड़ा बना के और स्वयं छोटे बनकर सीखना चाहिए और वे जो भी उपदेश करें, उसमें आदरपूर्वक अपने-आपको समाहित करना चाहिए ।

आप अपने साथ अन्याय तो नहीं कर रहे हैं ?

यदि आप मनुष्य-जन्म पाकर भी और विचारशक्ति सम्पन्न होकर भी मोक्ष के लिए प्रयत्न नहीं करते तो आप अपने प्रति बहुत निष्ठुरता बरत रहे हैं, अपने साथ अन्याय कर रहे हैं । समझदार आदमी का काम यह है कि वह पहले अपनी विमुक्ति के लिए प्रयत्न करे। उसके लिए क्या तैयारी करे ?

(गतांक से आगे)

तो वह तैयारी यह है कि बाहरी वस्तुओं में जो सुख की स्पृहा है उसका संन्यास कर दे । संन्यास माने कपड़ा रँगना नहीं, जंगल में चले जाना नहीं बल्कि अपने मन में जो इच्छाएँ-वासनाएँ हैं, उनके त्याग का नाम संन्यास है । उसमें भी इच्छाओं के विषयों में जो यह बुद्धि है कि 'उन-उन विषयों में सुख है', उस बुद्धि के त्याग का नाम संन्यास है ।

यदि आप बाहरी वस्तुओं से सुख लेने के चक्कर में पड़े हैं कि यहाँ रहने से, यह खाने-पीने-भोगने से, ऐसे रहने से सुख मिलेगा तो आप जिंदगीभर के लिए उसमें फँस गये । न वस्तुओं की डिजाइन कभी खत्म होगी और न उनकी माँग कभी पूरी होगी । और फिर जहाँ सुख है ही नहीं, उस सुख के भ्रम की समाप्ति उनकी इच्छा करने से कैसे होगी ? आप अंतर्यामी परमेश्वर के सुख का, परमानंद का, आत्मानंद का तो तिरस्कार कर रहे हैं और उसे बाहर के विषय-विकारों में ढूँढ़ रहे हैं ! क्या विडम्बना है ! जो चीज सड़ने-गलनेवाली है, मरनेवाली है उससे आप सुख की आशा करते हो ? आपके भीतर सुख की जो पवित्र गंगा बह रही है, उसके आस्वादन का आपने कभी प्रयत्न नहीं किया और बाहर आपने बहुत महँगी शराब खरीदी ! आपको सुखी होने की तो स्पृहा है परंतु जो एकरस, सुखस्वरूप, आनंदस्वरूप है उससे सुखी होने की इच्छा नहीं है । तो बाबा, इतनी बात तो पहले आपके अंदर आनी चाहिए कि आप बाहरी वस्तुओं से जो सुख प्राप्त करना चाहते हैं, उस इच्छा का संन्यास कर दें ।

इसके पश्चात् आप किन्हीं महापुरुष की शरण में जाइये । वे आपको मुक्ति का मार्ग दिखायेंगे । वे ही आपके गुरु होंगे । गुरु वही होता है जो परमात्मा को दिखा दे । उनसे आपने पूछा कि 'ईश्वर कहाँ है ?' और उन्होंने अपने कलेजे की ओर उँगली उठाकर दिखा दिया कि 'यहाँ है ।' आपने पूछा कि 'ईश्वर कौन है ?' और उन्होंने आपकी ओर उँगली उठाकर बता दिया कि 'तुम ईश्वर हो ।'

इसीसे गुरु को 'देशिक' भी कहा जाता है । देशिनी एक उँगली होती है, उसके द्वारा जो बोधन करे वह देशिक । 'मुक्ति कब, कहाँ, क्या ?' पूछने पर वे अंगुलि-निर्देश करके बतायेंगे, 'मुक्ति अभी, यहीं, तुम, तुम्हारा स्वरूप !'

वह गुरु कैसा हो ? जो संत हो, महानतम हो और सन्मात्र (अस्तिमात्र) (शेष पृष्ठ १८ पर)

पुत्रवान भव राजन्

- पूज्य बापूजी

राजा दिलीप को कोई संतान नहीं थी। वे गुरु वसिष्ठजी के चरणों में गये और प्रार्थना की : ''गुरुवर ! ऐसा कोई उपाय बतायें जिससे मैं संतानप्राप्ति कर सकूँ।''

गुरुवर वसिष्ठजी ने कहा : ''राजन् ! आश्रम में रहकर नंदिनी गाय की सेवा करो। अगर उसकी सेवा से उसे संतुष्ट कर सको तो काम बन जायेगा।''

गुरुवर की आज्ञा शिरोधार्य करके राजा दिलीप नंदिनी की सेवा करने लगे। वे उसे चराने के लिए रोज जंगल में ले जाते। सेवा करते-करते राजा को बहुत समय बीत गया।

एक दिन जब राजा दिलीप नंदिनी को चराने ले गये, तब जंगल में एक सिंह ने नंदिनी के ऊपर अपना पंजा रख दिया। यह देखकर दिलीप बोल उठे : ''रुको-रुको ! हे वनकेसरी ! गाय को क्यों मारते हो ?''

सिंह : ''यह तो मेरा आहार है।''

दिलीप : ''यह तुम्हारा आहार नहीं, मेरे गुरुदेव की गाय है। मैं इसका सेवक हूँ। जब तक सेवक जीवित हो, तब तक सेव्य कष्ट नहीं पा सकता। मैं गाय चराने के लिए आया हूँ, इसकी सेवा करने आया हूँ। इसकी रक्षा करना मेरा कर्तव्य है। अगर तुम्हें भूख ही लगी हो तो मेरा आहार कर लो लेकिन नंदिनी पर प्रहार मत करो।''

''मानव-देह बड़ी मूल्यवान है। पशु तो आता-जाता रहता है। उसका उपयोग करना होता है। मानव के लिए पशु है, पशु के लिए मानव नहीं।''

दिलीप : ''आपकी यह बात आपके ही पास रहे। मनुष्य अगर मानवता छोड़ दे तो वह पशु से भी बदतर है। मेरा कर्तव्य है इसकी सेवा करना। अतः मुझे अपने कर्तव्य में ही लगे रहने दो वनकेसरी !''

राजा दिलीप सिंह के सामने नीचे सिर करके पड़ गये। राजा की अटूट निष्ठा देखकर देवताओं द्वारा पुष्पवृष्टि होने लगी और सिंह गायब हो गया। नंदिनी बोली : ''राजन् ! तुम्हारी परीक्षा लेने के लिए मैंने ही माया का सिंह बनाया था। मैं तुम्हारी गुरुभक्ति से और मेरे प्रति प्रदर्शित दया भाव से अत्यंत प्रसन्न हूँ। पुत्रवान भव राजन् ! तेजस्वी भव। यशस्वी भव। पुत्रप्राप्ति के लिए अब तुम मेरा दूध दुहकर पी लो।''

राजा बोले : ''माता ! बछड़े के पीने के बाद तथा धार्मिक अनुष्ठान के बाद बचे दूध को ही मैं पी सकता हूँ।''

यह सुन नंदिनी अत्यंत प्रसन्न हुई। दोनों आश्रम लौट आये। बछड़े के पीने व होमादि अनुष्ठान के बाद बचे दूध का गुरुआज्ञा पाकर राजा ने पान किया। समय पाकर राजा दिलीप के यहाँ संतान का जन्म हुआ जो राजा रघु के नाम से प्रख्यात हुए और इन्हींके नाम पर कुल का नाम पड़ा रघुकुल। इसी कुल में आगे चलकर मर्यादापुरुषोत्तम भगवान श्रीराम का अवतरण हुआ है। कैसी है महत्ता गुरुआज्ञा-पालन की और कैसी है महिमा गुरुसेवा की ! और कैसी है राजा दिलीप की निष्ठा !

संस्कृत सभी भाषाओं की जननी है : सर्वोच्च न्यायालय

संस्कृत भाषा भारतीय संस्कृति का आधारस्तम्भ है । यह संसार की समृद्धतम भाषा है । इसका अध्ययन मनुष्य को सूक्ष्म विचारशक्ति प्रदान करता है और मौलिक चिंतन को जन्म देता है । इससे मन स्वाभाविक ही अंतर्मुख होने लगता है।

सनातन संस्कृति के सभी मूल शास्त्र संस्कृत भाषा में ही हैं। अतः उनके रसपान व ज्ञान में गोता लगाने के लिए इस भाषा का ज्ञान होना अति आवश्यक है। पूज्य संत श्री आशारामजी बापू पिछले ५० वर्षों से अपने सत्संगों द्वारा इसकी महत्ता बताते आये हैं और सत्संग में वेद, उपनिषद्, गीता, भागवत के श्लोकों की सुंदर व्याख्या करके उनमें छुपे अमृत का रसास्वादन कराते रहे हैं। संस्कृत व संस्कृति के रक्षक पूज्य बापूजी कहते हैं : ''संस्कृत भाषा देवभाषा है और इसके उच्चारणमात्र से दैवी गुण विकसित होने लगते हैं । अधिकांश मंत्र संस्कृत में ही हैं।''

इस भाषा का ज्ञान सभी भारतवासियों को होना ही चाहिए। विद्यालयों में इसकी शिक्षा आवश्यक रूप से सभी बच्चों को मिलनी चाहिए। माननीय सर्वोच्च न्यायालय को सरकार की ओर से पेश अटॉर्नी जनरल ने बताया कि ''केन्द्रीय विद्यालयों में कक्षा ६ से ८ तक संस्कृत ही तीसरी भाषा होगी। जर्मन पढ़ाया जाना गलत है और गलती को जारी नहीं रखा जा सकता।''

इस पर माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने कहा : ''हमें क्यों अपनी संस्कृति भूलनी चाहिए ! संस्कृत के जरिये आप अन्य भाषाओं को आसानी से सीख सकते हैं। संस्कृत सभी भाषाओं की जननी है। सरकार अगले सत्र से इसे बेहतर तरीके से क्रियान्वित करे।''

संस्कृत का अखंड प्रवाह पालि, प्राकृत व अपभ्रंश भाषाओं से होता हुआ समस्त भारतीय भाषाओं में बह रहा है। चाहे तमिल, कन्नड़ या बंगाली हो अथवा मलयालम, ओड़िया, तेलुगू, मराठी या पंजाबी हो - सभी भारतीय भाषाओं के लिए संस्कृत ही अंतःप्रेरणा-स्रोत है। आज भी इन भाषाओं का पोषण और संवर्धन संस्कृत द्वारा ही होता है । संस्कृत की सहायता से कोई भी उत्तर भारतीय व्यक्ति तेलुगू, कन्नड़, ओड़िया, मलयालम आदि दक्षिण एवं पूर्व भारतीय भाषाओं को सरलतापूर्वक सीख सकता है। आज तो ऑक्सफोर्ड, कैम्ब्रिज और कोलम्बिया जैसे प्रतिष्ठित २०० से भी ज्यादा विदेशी विश्वविद्यालयों में संस्कृत पढ़ायी जा रही है।

ब्रिटिश विद्यालयों में संस्कृत अनिवार्य

'संस्कृत से छात्रों में प्रतिभा का विकास होता है। यह उनकी वैचारिक क्षमता को निखारती है, जो

उनके बेहतर भविष्य के लिए सहायक है।' ऐसा मानना है लंदन के सेंट जेम्स कॉन्वेंट स्कूल का, जहाँ बच्चों को द्वितीय भाषा के रूप में संस्कृत सीखना आवश्यक है।

याददाश्त को भी बेहतर बनाती है संस्कृत

शिक्षाविद् पॉल मॉस के अनुसार 'संस्कृत से सेरेब्रल कॉर्टेक्स सक्रिय होता है। किसी बालक के लिए उँगलियों और जुबान की कठोरता से मुक्ति पाने के लिए देवनागरी लिपि व संस्कृत बोली ही सर्वोत्तम मार्ग है। वर्तमान यूरोपीय भाषाएँ बोलते समय जीभ और मुँह के कई हिस्सों का और लिखते समय उँगलियों की कई हलचलों का तो इस्तेमाल ही नहीं होता, जब कि संस्कृत उच्चारण-विज्ञान के माध्यम से मस्तिष्क की दक्षता को विकसित करने में काफी मदद करती है।'

डॉ. विल डुरंट लिखते हैं : 'संस्कृत आधुनिक भाषाओं की जननी है। संस्कृत बच्चों के सर्वांगीण बोध-ज्ञान को विकसित करने में मदद करती है।' कई शोधों में यह पाया गया कि जिन छात्रों की संस्कृत पर अच्छी पकड़ थी, उन्होंने गणित और विज्ञान में भी अच्छे अंक प्राप्त किये। वैज्ञानिकों का मानना है कि संस्कृत के तार्किक और लयबद्ध व्याकरण के कारण स्मरणशक्ति और एकाग्रता का विकास होता है । इसके ताजा उदाहरण हैं गणित का नोबल पुरस्कार कहे जानेवाले सर्वोच्च सम्मान 'फील्ड्स मेडल' के विजेता भारतीय मूल के गणितज्ञ मंजुल भार्गव, जो अपनी योग्यता का श्रेय संस्कृत भाषा को देते हैं। इसके तर्कपूर्ण व्याकरण ने उनके भीतर गणित की बारीकियों को समझने का तार्किक नजरिया विकसित किया।

मैकाले शिक्षा-पद्धति के पढ़े लोग अज्ञानवश इसे सिर्फ पूजा-पाठ, कर्मकांड से जुड़ा मानकर इस भाषा को अवैज्ञानिक तथा अनुपयोगी बताते हैं परंतु वास्तविकता यह है कि वर्तमान में यह भाषा केवल साहित्य, दर्शन या अध्यात्म तक ही नहीं बल्कि गणित, विज्ञान, औषधि, चिकित्सा, इतिहास, मनोविज्ञान, भाषाविज्ञान जैसे विविध क्षेत्रों में भी अपना महत्त्वपूर्ण स्थान बना रही है। इसके साथ ही आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और कम्प्यूटर क्षेत्र में भी संस्कृत के प्रयोग की सम्भावनाओं पर भारत ही नहीं, फ्रांस, अमेरिका, जापान, ऑस्ट्रेलिया, जर्मनी, इंग्लैंड आदि देशों में शोध जारी हैं। वानस्पतिक सौंदर्य प्रसाधन (हर्बल कॉस्मेटिक्स) एवं आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति के तेजी से बढ़ते प्रचलन से संस्कृत की उपयोगिता और बढ़ गयी है क्योंकि आयुर्वेद पद्धतियों का ज्ञान संस्कृत में ही लिपिबद्ध है। अपनी सुस्पष्ट और छंदात्मक उच्चारण प्रणाली के चलते संस्कृत भाषा को 'स्पीच थेरेपी टूल' (भाषण चिकित्सा उपकरण) के रूप में मान्यता मिल रही है।

लौकिक नश्वर उन्नति, वैज्ञानिक प्रगति एवं सुख-सुविधा के लिए संस्कृत का लाभ लेनेवालों को हमारा धन्यवाद है। परंतु यह तो बहुत छोटी चीज है, छाछ है, मक्खन तो संस्कृत साहित्य एवं शास्त्रों में छुपा अध्यात्मविद्या का ज्ञानामृत है, जो अनमोल है । मनुष्य-जन्म के परम लक्ष्य परमात्मप्राप्ति हेतु वैदिक, औपनिषदिक एवं गीता, भागवत, रामायण, महाभारत का ज्ञान-भंडार तो केवल और केवल संस्कृत भाषा में ही है। अन्यत्र जो भी है संस्कृत से (शेष पृष्ठ २३ पर)

प्रत्येक हिन्दू बालक को संस्कृत सीखनी ही चाहिए

– महात्मा गांधी

शिक्षकों का प्रेम मैं विद्यालयों में हमेशा ही पा सका था। अपने आचरण के विषय में मैं बहुत सजग था। आचरण में दोष आने पर मुझे रोना आ ही जाता था। मेरे हाथों कोई भी ऐसा काम बने, जिससे शिक्षकों को मुझे डाँटना पड़े अथवा शिक्षकों का वैसा खयाल बने तो वह मेरे लिए असह्य हो जाता था।

संस्कृत विषय चौथी कक्षा में शुरू हुआ था। विद्यार्थी आपस में बात करते कि 'फारसी बहुत आसान है।' मैं भी आसान होने की बात सुनकर ललचाया और एक दिन फारसी के वर्ग में जाकर बैठा। संस्कृत के शिक्षक को दुःख हुआ। उन्होंने मुझे बुलाया और कहा : ''यह तो समझ कि तू किनका लड़का है ! क्या तू अपने धर्म की भाषा नहीं सीखेगा ? तुझे जो कठिनाई हो वह मुझे बता। मैं तो सब विद्यार्थियों को बढ़िया संस्कृत सिखाना चाहता हूँ। आगे चलकर उसमें रस के घूँट पीने को मिलेंगे। तुझे यों हारना नहीं चाहिए। तू फिर से मेरे वर्ग में बैठ।''

मैं शिक्षक के प्रेम की अवमानना न कर सका। आज मेरी आत्मा कृष्णशंकर मास्टरजी का उपकार मानती है क्योंकि जितनी संस्कृत मैंने उस समय सीखी, उतनी भी न सीखी होती तो आज संस्कृत शास्त्रों में मैं जितना रस ले सकता हूँ, उतना न ले पाता। मुझे तो इस बात का पश्चात्ताप होता है कि मैं अधिक संस्कृत न सीख सका। क्योंकि (काफी) बाद में मैं समझा कि किसी भी हिन्दू बालक को संस्कृत का अच्छा अभ्यास किये बिना रहना ही न चाहिए।

भाषा पद्धतिपूर्वक सिखायी जाय और सब विषयों को अंग्रेजी के माध्यम से सीखने-सोचने का बोझ हम पर न हो तो भाषाएँ सीखना बोझरूप न होगा बल्कि उसमें बहुत ही आनंद आयेगा। असल में तो हिन्दी, गुजराती, संस्कृत एक भाषा मानी जा सकती हैं।

माँ के दूध के साथ जो संस्कार मिलते हैं और जो मीठे शब्द सुनाई देते हैं, उनके और पाठशाला के बीच जो मेल होना चाहिए, वह विदेशी भाषा द्वारा शिक्षा लेने से टूट जाता है। राष्ट्रीयता टिकाये रखने के लिए किसी भी देश के बच्चों को नीची या ऊँची, सारी शिक्षा उनकी मातृभाषा के जरिये ही मिलनी चाहिए।

****

(पृष्ठ २२ का शेष) ही प्रसादरूप में प्राप्त किया गया है। व्यासोच्छिष्टं जगत्सर्वम्।

जब विदेशी इसका भरपूर लाभ ले रहे हैं तो भारतीय इस अनूठी सभ्यता की अनमोल धरोहर से वंचित क्यों रहें ! भारतीय संस्कृति की सुरक्षा, चरित्रवान नागरिकों के निर्माण, सद्भावनाओं के विकास एवं विश्वशांति हेतु भारत एवं पूरे विश्व में संस्कृत का अध्ययन-अध्यापन अवश्य होना चाहिए। इसीसे होगा सबका मंगल, सबका भला... सबका विकास, सच्चा विकास - मंगल और भला वाला।

आत्मज्ञान से सराबोर पूज्य बापूजी के पत्र

श्री लालजी महाराज पूज्य बापूजी से जुड़े अपने मधुर संस्मरणों को याद करते हुए बताते हैं : ''आशारामजी बापू ने मुझे ३०-४० पत्र लिखे थे, जिन्हें मैंने एक नोटबुक में मधुर संस्मरणों के रूप में लिखकर रखा है । उन्हें पढ़ने से संत आशारामजी का जीवन युवावस्था में कैसा ज्ञानमय था, यह समझ में आता है । सारे पत्रों में खेल-मौज में उच्च कोटि की ज्ञानगोष्ठी लिखी है ।'' प्रस्तुत है उनमें से एक पत्र :

दिनांक : ९-७-१९७०

प्रति,
परमात्मस्वरूप, रामस्वरूप में मस्तराम
श्री लालजी महाराज
श्री पंचकुबेरेश्वर महादेव
मोटी कोरल, बड़ौदा ।

नहीं है राम दूर तुझसे,
खुदी को मिटा, खुदा हो जा ।

शरीर को सत्ता-स्फूर्ति अर्पित करनेवाली चैतन्यशक्ति के चमत्कार से आशाराम नैनीताल से कानपुर 'विराट रामायण वेदांत सम्मेलन' में वक्ता के रूप में गया था । इस सम्मेलन में देश के कोने-कोने से विद्वान, संत, कवि, शास्त्रकार, महामंडलेश्वर एवं शंकराचार्य आदि महानुभाव पधारे हुए थे । यह सम्मेलन ७ दिन तक चला । कानपुर की सत्यप्रेमी जनता के शुभ भावों से आधा घंटा आध्यात्मिक आनंद में सराबोर होने का अवसर श्रोता भगवान और आशाराम को प्राप्त हुआ । लोग बहुत ही भाव से आध्यात्मिक ज्ञान सुनते थे ।

वहाँ एक मास के लिए सत्संग करने की माँग हुई परंतु भाई ! यह तो अलमस्त है । विचार आया और कमंडलु हाथ में लेकर चल पड़े । सर्वत्र एक ही सत्ता है तो व्यवहार-भट्ठे में पकने की कौन माथापच्ची करे !

भोजन छाजन नीर की चिंता करे सो मूढ़ ।
ज्ञानी चिंता न करे, निज पद में आरूढ़ ।।
निज पद में आरूढ़ चिंता करे सो कैसी ?
खुशी है ता में प्राप्त अवस्था जैसी ।।
निज पद में आरूढ़ सो, राखे आई चलाई ।
आगे होवनहार है, जहाँ तहाँ हम हैं भाई ।।

आपके निजस्वरूप ने तो कानपुर में एक दिन प्रवचन करके भोलानाथ की लाड़ली नगरी काशी में ४ दिन तक विचरण किया । फिर माउंट आबू की नल गुफा में एकांत अनुभव करते हुए व्यवहारभार भस्म होने से फिर से डीसा में आकर ब्रह्मानंद की सरिता बहायी । (शेष पृष्ठ २५ पर)

आत्मकल्याण का अमोघ उपाय भगवन्नाम-जप

अपना जीवन भगवान के अधीन है और भगवान नामजप के अधीन हैं। भगवत्कृपा को हमारी ओर खींच लाता है भगवन्नाम। पीड़ित, विषादग्रस्त, शिथिल, भयभीत मनुष्य भी भगवन्नाम जप-कीर्तन से सभी दुःखों के प्रभाव से छूटकर सुखी हो जाते हैं। नाम-जप से दिव्य रक्षा-कवच बनता है, जो जापक को विभिन्न हलके तत्त्वों से बचाकर आध्यात्मिक व लौकिक उन्नति के मार्ग पर अग्रसर करता है।

भगवन्नाम का सदैव जप किया जा सकता है। पूज्य बापूजी कहते हैं : ''भगवन्नाम में न देश-काल का नियम है, न शुद्धि-अशुद्धि का और न अपवित्र-पवित्र अवस्था का नियम है। जब चाहे, जहाँ चाहे, किसी भी स्थिति में चलते-फिरते, खाते-पीते, सोते - सभी समय भगवन्नाम जप-कीर्तन-सुमिरन करके मनुष्य बाहर-भीतर से पवित्र हो स्वयं परमात्ममय हो जाय तो इसमें क्या आश्चर्य !''

गुरुमंत्र का जप अनंत गुना फलदायी

संत तुलसीदासजी के इष्ट रामजी थे, अतः उन्होंने रामनाम बोला। संत तुकारामजी के इष्ट विट्ठल थे तो उन्होंने विट्ठल-विट्ठल नाम जपा, भक्तिमती मीराबाई के इष्ट श्रीकृष्ण थे तो उन्होंने उनका नाम जपा। अतः जिनके जो इष्ट हों, उन्हें उनका नाम-जप करना चाहिए और जिन्हें भगवत्प्राप्त महापुरुष मिल गये हों, उनसे भगवन्नाम की दीक्षा मिली हो, उनके लिए गुरुमंत्र का जप करना अनंत गुना फलदायी है। व्यक्ति को भगवन्नाम-जप अवश्य करना चाहिए।

जप का सतत अभ्यास आत्मशुद्धि, आत्मशांति और आत्मकल्याण का अमोघ उपाय है। जो भगवन्नाम-जप प्रारम्भ कर देता है, उसके मन की बाहर भटकने की क्रिया धीरे-धीरे कम होती जाती है। लगातार नाम-स्मरण करते रहेंगे तो विषयासक्ति कम होती जायेगी और भगवद्रस, भगवदीय सुख प्राप्त होता जायेगा। यह पढ़कर अभी से दृढ़ निश्चय करो, लग जाओ। ॐ हरि, ॐ आनंद, प्रभुजी... मेरेजी... ॐ ॐ...

(पृष्ठ२४ का शेष) डूब मरो, जिसे डूबने की तीव्र इच्छा हो ! डूब मरें ? हाँ, खूब लाभ होगा। इससे अधिक कोई लाभ नहीं है। क्या मिलेगा ? समस्त दुःखों की निवृत्ति और परमानंद की प्राप्ति। भगवत्स्वरूप हो जाओगे। वह सरिता कहाँ है ? आपके अंतःकरण में ब्रह्माकार वृत्तिरूप सरिता। ॐ आनंद... बहुत ही आनंद...

अब अन्य स्थान पर सत्संग हेतु जाना होगा। सभीको स्वराज प्राप्त हो इसलिए आशाराम निमंत्रण स्वीकार रहा है। सबको नम्र प्रणाम ! सब नहीं हैं फिर भी सबमें जो है, वही आप हैं और मेरे निजस्वरूप हैं। जय हरि !

- आशाराम

साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज आश्रम ,डीसा (गुजरात) (क्रमशः)

सर्वमान्य शास्त्र भगवद्गीता राष्ट्रीय ग्रंथ क्यों नहीं ?

'श्रीमद्भगवद्गीता' भारतीय संस्कृति का श्रेष्ठतम आध्यात्मिक ग्रंथ है । यह किसी धर्म-विशेष का ग्रंथ नहीं बल्कि सभी धर्मों के लिए कल्याणकारी मार्गदर्शक है । विश्व के सभी धर्मों के महापुरुषों तथा विद्वानों ने मुक्तकंठ से 'भगवद्गीता' की प्रशंसा की है । कुछ उद्गार :

''इस ग्रंथ में किसी भी देश, जाति के तमाम मनुष्यों के कल्याण की अलौकिक सामग्री भरी हुई है।'' – भगवत्पाद साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज

''गौ और गीता ईश्वरप्रदत्त अमूल्य निधि हैं । इन दोनों का आश्रय लेकर मनुष्यमात्र स्वस्थ, सुखी व सम्मानित जीवन की प्राप्ति और परमात्मप्राप्ति भी कर सकता है।''

– पूज्य संत श्री आशारामजी बापू

''मैं चाहता हूँ कि गीता न केवल राष्ट्रीय शालाओं में बल्कि सभी शिक्षण संस्थाओं में पढ़ायी जाय। गीता से मैं शोक में भी मुस्कराने लगता हूँ।'' – महात्मा गांधी

''अब तक जितने भी स्पष्ट और पूर्ण शाश्वत दर्शनशास्त्र के सारांश प्रकट हुए हैं, उनमें से एक है गीता। इसलिए वह सिर्फ भारत ही नहीं, सम्पूर्ण मानव-जाति के लिए शाश्वत, अमूल्य धरोहर है।''

– अल्दु हक्सली

''गीता-वक्ता भगवान श्रीकृष्ण का उपदेश केवल आर्य जाति के लिए नहीं है बल्कि समस्त भूत-प्राणियों के लिए है।''
- मुसलिम विद्वान डॉ. मुहम्मद हाफिज सैय्यद

''किसी भी जाति को उन्नति के शिखर पर चढ़ाने के लिए गीता का उपदेश अद्वितीय है।''
- ब्रिटिश शासन में भारत के प्रथम गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिंग्ज

विभिन्न धर्मों एवं राष्ट्रों के विश्वविख्यात व्यक्तियों ने भी 'गीता' को अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाया है। **प्रसिद्ध वैज्ञानिक आइंस्टीन,** जो यहूदी थे, गीता अपने सिरहाने रखते थे। उन्होंने कहा : ''जब मैं भगवद्गीता पढ़ता हूँ और ईश्वर ने सृष्टि कैसे बनायी उस विषय का मनन करता हूँ, तब मुझे अन्य सब बातें असार प्रतीत होती हैं।''
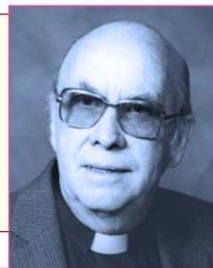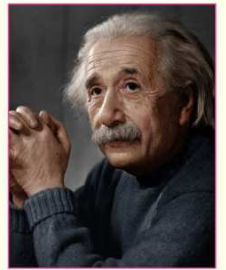
मुझे अन्य सब बातें असार प्रतीत होती हैं।''

''जगद्गुरु श्रीकृष्ण ने 'भगवद्गीता' के रूप में जगत को अनुपम देन दी है।''
- ईसाई धर्मोपदेशक रेवरंड आर्थर

अमेरिकी विद्वान हेनरी थोरो ने कहा : ''गीता के साथ तुलना करने पर आधुनिक जगत का ज्ञान और साहित्य मुझे तुच्छ लगता है। मैं नित्य प्रातःकाल अपने हृदय और बुद्धि को गीतारूपी पवित्र जल में स्नान कराता हूँ।''
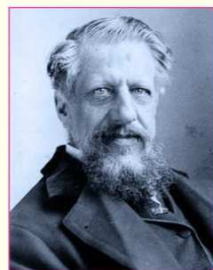
अंग्रेजी के प्रसिद्ध साहित्यकार **सर एडविन आर्नोल्ड** से जब पूछा गया कि उन्होंने गीता का पद्य अनुवाद क्यों किया तो वे कहते हैं : ''इतने उच्च कोटि के विद्वानों के पश्चात् जो मैं इस ऐश्वर्य-जनक काव्य का अनुवाद करने का साहस कर रहा हूँ, वह केवल इन विद्वानों के परिश्रम से उठाये हुए लाभ की स्मृति में है और उसका एक दूसरा कारण यह भी है कि भारतवर्ष के इस सर्वप्रिय दार्शनिक ग्रंथ के काव्यमय अनुवाद के बिना अंग्रेजी साहित्य निश्चित ही अपूर्ण रहता।''
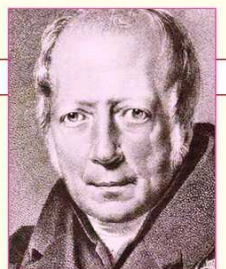
''किसी भी ज्ञात भाषा में कोई दार्शनिक काव्य हो जो सबसे सुंदर हो तो वह गीता है। जगत में सबसे गहन और उच्च वस्तु अगर कोई है तो वह गीता है।''
- विल्हेल्म वों हम्बोल्ट प्रशिया के शिक्षा मंत्री, मेधावी भाषाविद
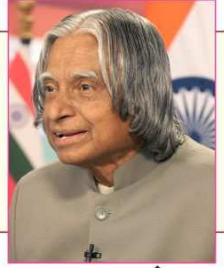
भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम कहते हैं : ''गीता मानवमात्र के लिए शाश्वत प्रेरणा का स्रोत है । गीता का अध्ययन करने पर मेरी समस्याओं का समाधान हो जाता है।''

भारतसहित पूरे विश्व के महापुरुषों, विद्वानों एवं तत्त्वचिंतकों ने 'गीता' ग्रंथ को उत्कृष्ट ग्रंथ घोषित किया है। 'गीता' के ज्ञान से सभी धर्म के लोग लाभान्वित हुए हैं और हो रहे हैं। ऐसे सर्वमान्य शास्त्र को भारत का राष्ट्रीय धर्मग्रंथ क्यों नहीं बनाया जाय ?

३० अगस्त २००७ को इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने भी कहा था कि 'भगवद्गीता सभी धर्मों का निचोड़ है और इसने हमारे स्वतंत्रता संग्राम में भी प्रेरक की भूमिका निभायी है। इसलिए ऐसे ग्रंथ को राष्ट्रीय धर्मशास्त्र की मान्यता दी जानी चाहिए। हर नागरिक का कर्तव्य है कि वह 'भगवद्गीता' के आदर्शों पर अमल करे और धरोहरों की रक्षा करे।'

'गीता' को राष्ट्रग्रंथ बनाये जाने में आपत्ति केवल उन्हीं लोगों को है जो गीता-ज्ञान से अनजान हैं। 'गीता' का अध्ययन किये बिना ही उसे राष्ट्रग्रंथ बनाये जाने का विरोध कर भारत के गौरवशाली अतीत को अनदेखा नहीं किया जा सकता।

सनातन धर्म के योगशास्त्र, वेदों पर आधारित वैदिक गणित तथा ॐकार मंत्र का लाभ विश्व के सभी धर्मों के लोग ले सकते हैं, 'श्रीमद्भगवद्गीता' ग्रंथ का लाभ जब मैनेजमेंट सिखानेवाली विदेशी संस्थाएँ और मनोचिकित्सक ले सकते हैं तो भारत के सभी धर्मों के लोग इस महान शास्त्र का लाभ क्यों नहीं ले सकते ?

पूज्य बापूजी कहते हैं : ''यदि हमें सुसंस्कारों द्वारा जन-जन में राष्ट्रीयता की भावना का संचार करना है तो विद्यार्थियों के पाठ्यक्रम में, घरों में कथा-कहानियों द्वारा तथा समाज में गीतों के द्वारा गीता के महत्त्व को समझाया जाय। इससे हमारी संस्कृति के लाड़ले नौनिहाल पुनः भारत के शास्त्र, संत व संस्कृति के उत्कृष्ट सिद्धांतों का लाभ लेकर विश्वशांति व विश्व-मांगल्य के दैवी कार्यों में अधिक-से-अधिक संख्या में सहभागी होंगे।''

पूज्य बापूजी पिछले ५० वर्षों से अपने सत्संगों के माध्यम से गीता-ज्ञान का प्रचार-प्रसार सतत करते रहे हैं। आश्रम द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'ऋषि प्रसाद', मासिक समाचार पत्र 'लोक कल्याण सेतु' एवं सत्साहित्य द्वारा गीता की महत्ता सतत समाज तक पहुँचायी जाती रही है।

भारतीय संस्कृति की अनमोल धरोहर 'श्रीमद्भगवद्गीता' का लाभ समस्त विश्व ले इसके लिए शुरुआत भारत को ही करनी होगी। 'श्रीमद्भगवद्गीता' को राष्ट्रीय ग्रंथ घोषित करने के लिए आप भी पत्र, ज्ञापन आदि के द्वारा अपने-अपने क्षेत्र के सांसदों, विधायकों, जिलाधीशों आदि को अपने विचारों से अवगत करायें तथा माननीय राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, गृह मंत्रालय, देश के मुख्य न्यायाधीश इत्यादि को ज्ञापन सौंपें। गीता के ज्ञान को ब्रह्मज्ञानी महापुरुषों द्वारा बताये सिद्धांतों पर चलकर आत्मसात् करें तथा इसका प्रचार कर विश्व-मांगल्य के कार्य में आप भी सहभागी हों।

मानवमात्र की भलाई हेतु पूज्य बापूजी की पावन प्रेरणा से विश्वमानव को मिली नयी सौगात

विश्वगुरु भारत कार्यक्रम

२५ दिसम्बर से १ जनवरी के दौरान शराब आदि नशीले पदार्थों का सेवन, आत्महत्या जैसी घटनाएँ, युवाधन की तबाही एवं अवांछनीय कृत्य खूब होते हैं। इसलिए प्राणिमात्र का मंगल एवं भला चाहने और करने वाले पूज्य बापूजी ने आवाहन किया : ''२५ दिसम्बर से १ जनवरी तक तुलसी-पूजन, माला-पूजन, गौ-पूजन, हवन, गौ-गीता-गंगा जागृति यात्रा, सत्संग आदि कार्यक्रम आयोजित हों, जिससे सभी की भलाई हो, तन तंदुरुस्त व मन प्रसन्न रहे तथा बुद्धि में बुद्धिदाता का प्रसाद प्रकट हो। गौ, गंगा, तुलसी से ओजस्वी-तेजस्वी बनें व गीता-ज्ञान से अपने मुक्तात्मा, महानात्मा स्वरूप को जानें।''

पूज्य बापूजी के आवाहन पर सभी आश्रमों, सेवा समितियों, युवा सेवा संघों, बाल संस्कार केन्द्रों, महिला उत्थान मंडलों, गुरुकुलों के अलावा पूज्यश्री के असंख्य शिष्यों द्वारा देश-विदेश में २५ दिसम्बर को 'तुलसी पूजन दिवस' पर्व बड़े उत्साह से मनाया गया । (तस्वीरों हेतु देखें आवरण पृष्ठ एवं आश्रम की वेबसाइट www.ashram.org) २८ दिसम्बर को विभिन्न आश्रमों में जप-माला एवं गौ पूजन तथा यज्ञ का आयोजन हुआ। ३० दिसम्बर को 'सहज स्वास्थ्य एवं योग प्रशिक्षण शिविर' आयोजित हुए। ३० दिसम्बर से १ जनवरी के दौरान 'विद्यार्थी उज्ज्वल भविष्य निर्माण शिविर' हुए। ३१ दिसम्बर को देशभर में गौ-गीता-गंगा जागृति यात्राओं एवं राष्ट्र जागृति यात्राओं के द्वारा व्यसनमुक्ति का संदेश दिया गया।

गीता जयंती पर हुए विभिन्न कार्यक्रम

पूज्य बापूजी द्वारा गीता-ज्ञान का प्रसाद जन-जन तक पहुँचाने का भगीरथ कार्य पिछले ५० वर्षों से होता आ रहा है। बापूजी ने इस महान ग्रंथ की उपयोगिता बताते हुए प्रतिदिन गीता के कम-से-कम एक-दो श्लोकों का अध्ययन सभीको करने का संदेश दिया है । आपश्री की प्रेरणा से देश-विदेश में गीताजी का पूजन, पाठ, शोभायात्रा, सत्साहित्य वितरण आदि कार्यक्रमों के माध्यम से गीता जयंती व्यापक स्तर पर मनायी गयी।

माँ का ऋण कैसा ? - पूज्य बापूजी

स्वामी विवेकानंद को किसी युवक ने कहा : ''महाराज ! कहते हैं कि माँ का ऋण चुकाना कठिन होता है। ऐसा तो क्या है माँ का ऋण ?''

विवेकानंदजी : ''इस प्रश्न का उत्तर प्रायोगिक चाहते हो ?''

''हाँ महाराज !''

''थोड़ी हिम्मत करो, यह जो पत्थर पड़ा है, इसको अपने पेट पर बाँध लो और ऑफिस में काम करने जाओ। शाम को मिलना।''

पेट पर ढाई-तीन किलो का पत्थर बँधा हो और कामकाज करे तो क्या हालत होगी ? आजमाना हो तो आजमा के देख लेना। नहीं तो मान लो, क्या हालत होती है !

वह थका-माँदा शाम को लौटा। विवेकानंदजी के पास जाकर बोला : ''माँ का ऋण कैसा ? इसका जवाब पाने में तो बहुत मुसीबत उठानी पड़ी। अब बताने की कृपा करें कि माँ का ऋण कैसा होता है ?''

''यह पत्थर तूने कब से बाँधा है ?''

''आज सुबह से।''

''एक ही दिन हुआ, ज्यादा तो नहीं हुआ न ?''

''नहीं।''

''तू एक दिन में ही तौबा पुकार गया। जो महीनों-महीनों तेरा बोझ लेकर घूमती थी, उसने कितना सहा होगा ! उसने तो कभी ना नहीं कहा। अब इससे ज्यादा प्रायोगिक क्या बताऊँ तुझे ?''

****

दिमागी कसरत

नीचे दिये गये प्रश्नों में बताये गये पर्व, जयंतियाँ एवं तिथियाँ हिन्दी कालगणना के अनुसार किस-किस मास में आती हैं, उनके नाम वर्ग-पहेली में खोजिये।

(१) भीम कौन-से मास की एकादशी का व्रत करते थे ?

(२) किस मास की चौथ का चाँद देखने से कलंक लगता है ?

(३) किस मास में सभी जल गंगाजल के समान होते हैं ?

(४) महाशिवरात्रि किस मास में आती है ?

(५) संस्कृत दिवस किस मास की पूनम को मनाया जाता है ?

(६) अक्षय तृतीया किस मास में आती है ?

(७) पूज्य बापूजी को आत्मसाक्षात्कार किस मास में हुआ था ?

(८) सफला एकादशी किस मास में आती है ?

(९) गीता जयंती किस मास में आती है ?

(१०) गुरुपूर्णिमा महापर्व का मास बताइये।

(११) ब्रह्मलीन मातुश्री श्री माँ महँगीबाजी का महानिर्वाण दिवस किस मास में आता है ?

(१२) ब्रह्मलीन भगवत्पाद साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज का प्राकट्य दिवस किस मास में आता है ?

(उत्तर अगले अंक में प्रकाशित होंगे।)

म	ई	पौ	न	ज	न	व	री	अ	आ	षा	ढ़
द	फा	ण	सा	चै	रा	वि	वै	शा	ख	तु	ड
अं	श	ल्गु	म	द्य	र	का	सा	स	शिव	चै	स्व
भा	व	ह	न	पौ	शि	र्ति	पा	र	आ	श	श्रा
म	द्र	ज्ये	रा	ल्गु	दा	क	त्र	की	ष्ठ	व	स्ना
पा	ज्ये	प	भो	म	ष्ठ	न	दा	दी	ण	ग	न
मा	र्च	बा	द	ज्ये	जू	शिव	द्र	गु	रो	ङ	चै
ष	चै	व	ई	ढ़	ष्प	सं	ज्ये	जा	रा	गु	चं
न	ख	प्र	य	चै	ली	चै	त्र	ग	शिव	व	ड
शिव	न	मा	नी	ल	शि	व	फा	प	चै	ढ़	पौ
आ	घ	शा	प्रै	पा	पौ	वा	मा	र्ग	शी	र्ष	ढ़
ष्ठ	श	अ	त्र	व	न्ना	ष	न	ष्ठ	द	यो	फा

स्वस्तिकासन

इस आसन में शरीर का आकार स्वस्तिक जैसा हो जाता है इसलिए इसे 'स्वस्तिकासन' कहते हैं।

लाभ : (१) मन शांत व स्थिर, मेरुदंड पुष्ट तथा वायुरोग दूर होते हैं।

(२) रक्त शुद्ध होता है, हृदय को रक्त अधिक मिलता है।

(३) जिनके पैरों में दर्द होता हो, पैरों के तलवे ठंड के दिनों में बहुत अधिक ठंडे रहते हों तथा गर्मी के दिनों में बहुत अधिक पसीना आता हो अथवा पसीने से पैरों में बदबू आती हो, उनको इसका अभ्यास प्रतिदिन २० मिनट तक अवश्य करना चाहिए।
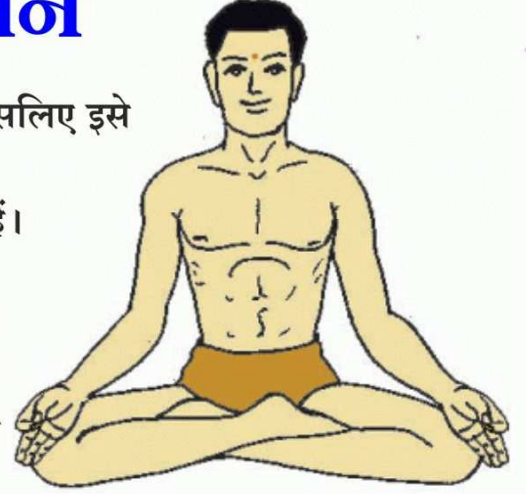
(४) इस आसन से सिद्धासन से होनेवाले अनेक लाभ भी प्राप्त होते हैं।

विधि : जमीन पर बैठकर पैरों को सामने की ओर फैला दें । फिर बायें घुटने को मोड़कर बायें पैर के तलवे को दायीं जाँघ के भीतरी भाग के पास इस प्रकार रखें कि एड़ी सिवनी को स्पर्श न करे । अब दायें घुटने को मोड़कर दायें पैर को बायें पैर के ऊपर इस प्रकार रखें कि दायाँ पंजा बायीं जाँघ को स्पर्श करे । दोनों पैरों के पंजे जंघा और पिंडली के बीच दबे रहेंगे । एड़ियाँ श्रोणि प्रदेश का स्पर्श न करें । घुटने जमीन के सम्पर्क में रहें । रीढ़ की हड्डी सीधी तथा हाथों को ज्ञान मुद्रा में घुटनों पर रखें।

सावधानी : साइटिका एवं रीढ़ के निचले भाग के विकारों से पीड़ित लोगों को यह आसन नहीं करना चाहिए।

लाभकारी मुद्रा

मासिक धर्म नियमित करनेवाली असरकारक मुद्रा

लाभ : इसके नियमित अभ्यास से -

(१) मासिक धर्म से संबंधित समस्याएँ दूर हो जाती हैं।

(२) मांसपेशियों और नाड़ियों को आराम मिलता है, जिससे दबाव, तनाव व क्रोध के आवेग को नियंत्रित करने की क्षमता बढ़ती है।

(३) अतिस्राव में भी नियंत्रण होता है।

(४) पेट को शीतलता मिलती है और मस्तिष्क की कोशिकाओं को सक्रिय करने में सहायता होती है।

विधि : दोनों हाथों की उँगलियों को इस तरह फँसायें कि दोनों अँगूठों के अग्रभाग आपस में जुड़े हुए हों । दाहिने हाथ की तर्जनी को बायें हाथ की तर्जनी और मध्यमा के बीच फँसा दें । दाहिने हाथ की मध्यमा को बायें हाथ की मध्यमा और अनामिका के ऊपर से ले जाकर कनिष्ठिका के नीचे फँसा दें । दाहिने हाथ की अनामिका बायें हाथ की मध्यमा और अनामिका के नीचे रहेगी । अब दाहिने हाथ की कनिष्ठिका को बायें हाथ की कनिष्ठिका के नाखून के ऊपर रखें।

राष्ट्रीय स्तर पर लहराया संत श्री आशारामजी गुरुकुल का परचम

बहुप्रतिष्ठित 'राष्ट्रीय किशोर वैज्ञानिक सम्मेलन' के लिए देश के हजारों विद्यालयों में से जिन २१ विद्यालयों की कृतियों का चयन हुआ, उनमें से एक है - संत श्री आशारामजी गुरुकुल, अहमदाबाद।

विद्यार्थियों की प्रतिभा विकसित करने के लिए शासन द्वारा देशभर में प्रतिवर्ष 'गणित-विज्ञान प्रदर्शनी' का आयोजन होता है । इस प्रदर्शनी में पिछले ५ सालों से संत श्री आशारामजी गुरुकुल, अहमदाबाद ने श्रेष्ठतम प्रदर्शन करते हुए पूरे भारत में गुरुकुल का परचम लहराया है । एक संक्षिप्त जानकारी :

सत्र २०१०-११ में गुरुकुल के विद्यार्थियों का 'एयरपोर्ट गणित' प्रकल्प राज्यस्तरीय प्रदर्शनी में सराहा गया था । इसमें एयरपोर्ट को ऐसी आकृति दी गयी थी कि कम क्षेत्रफल में अधिक हवाई जहाज उतर सकें ।

सत्र २०११-१२ में 'पानी से ईंधन' बनानेवाला प्रकल्प बनाया गया था । यह सभी स्तरों को पार कर राष्ट्रीय स्तर पर छउएठढ द्वारा आयोजित प्रदर्शनी में भी छाया रहा । राष्ट्रीय स्तर पर 'विज्ञान एवं तकनीकी विभाग' द्वारा आयोजित विज्ञान प्रदर्शनी में भी इसे भरपूर सराहना मिली । इस कृति (मॉडल) के द्वारा पानी से हाइड्रॉक्सी गैस उत्पन्न करके गाड़ी चलाने की एवं भोजन बनाने की तकनीक दर्शायी गयी थी । सत्र

२०१२-१३ में 'ब्रेन कम्प्यूटर इंटरफेस टेक्नोलॉजी' यह कृति राज्य स्तर तक पहुँची और सराही गयी। इसमें विकलांग व्यक्ति के सोचने पर उसके मस्तिष्क की तरंग से व्हील चेयर का चलना दिखाया गया था।

सत्र २०१३-१४ में गुरुकुल का खोजा हुआ 'होम मेड ब्लड टॉनिक' प्रदर्शन हेतु राज्य स्तर पर पहुँचा। इस आयुर्वेदिक टॉनिक के उपयोग से हीमोग्लोबिन में अभूतपूर्व वृद्धि होती है एवं प्लेटलेट्स व श्वेत रक्तकणों की मात्रा भी आवश्यकतानुसार हो जाती है।

सत्र २०१३-१४ में ही 'आयनोक्राफ्ट' कृति को राष्ट्रीय स्तर पर **NCERT** द्वारा आयोजित विज्ञान मेले में प्रदर्शन हेतु चुना गया। इसके द्वारा हवाई जहाज केवल विद्युत ऊर्जा से उड़ सकता है। इसमें इंजन, ईंधन तथा मोटर की आवश्यकता नहीं होती है। अंतरिक्ष यान केवल विद्युत व झेनॉन गैस की सहायता से उड़ सकता है। इस कृति को इतनी प्रशंसा मिली कि 'आर्यन्स ग्रुप ऑफ कॉलेजेस' के इंजीनियरिंग विभाग ने इसे अपने यहाँ प्रदर्शन हेतु आमंत्रित किया। वहाँ भी इसे विद्यार्थियों व प्राध्यापकों ने बहुत सराहा और गुरुकुल के छात्रों को 'युवा वैज्ञानिक' कह के उनका सम्मान किया।

बताया जाता है कि तहसील स्तर पर अलग-अलग विद्यालयों से आयी ७०० कृतियों में से ६५ से ७० कृतियों का चयन जिला स्तर के लिए होता है। ऐसी २ से ३ हजार कृतियों में से लगभग ३५० कृतियाँ राज्य स्तर पर व हर राज्य से प्रायः औसतन ९-१० कृतियाँ ही राष्ट्रीय स्तर पर पहुँचती हैं। ऐसी करीब १८० कृतियों का प्रदर्शन राष्ट्रीय स्तर पर होता है। उनमें से केवल २१ कृतियों का चयन 'इंडियन साइंस काँग्रेस' के 'राष्ट्रीय किशोर वैज्ञानिक सम्मेलन' के लिए किया जाता है। इन सभी पड़ावों को पार करते हुए इस बहुप्रतिष्ठित राष्ट्रीय सम्मेलन में पहुँचने का सम्मान प्राप्त किया है संत श्री आशारामजी गुरुकुल, अहमदाबाद ने। वहाँ आयनोक्राफ्ट कृति प्रदर्शित की जायेगी। आपको बता दें कि पूरे गुजरात से चयनित यह एकमात्र कृति है।

सत्र २०१४-१५ में गुरुकुल के 'थर्मो-इलेक्ट्रिक लैम्प' को राज्य स्तर के लिए चुना जा चुका है। इस तकनीक के द्वारा एक दीपक की ऊष्मा को विद्युत शक्ति में रूपांतरित करके लैम्प जला सकते हैं। इसके द्वारा गाँव में बिजली की समस्या का आसानी से हल निकाला जा सकता है।

****

(पृष्ठ ३५ से 'सामर्थ्य का ...' का शेष) संतों का आदर-पूजन होता रहेगा तब तक तेरा वंश नेपाल में राज्य करेगा।''

गुरुओं का तो एक वचन काफी हो जाता है। बलवंत ने कहा कि ''गुरुदेव ! आज से मेरे कुल का नाम आपके नाम से ही होगा। और हमारे कुल में जो भी होंगे वे 'गोरखा' के नाम से जाने जायेंगे।'' बलवंत के बाद गोरखा जाति चली। फिर गोरखनाथजी देशाटन करने लगे।

जिनकी वृत्ति भगवान में टिकी है, एकाग्र हुई है, ऐसे योगियों का संग किया तो बलवंत राजा बन गया। ऐसे योगी यदि किसीको योग-सामर्थ्य पाने का रास्ता बता दें और वह वैसा करे तो योगी भी बन जाय।

तात्पर्य यह है कि जैसे गोरखनाथजी हैं, ऐसे दूसरे नौ नाथ और उनके पहले भी कई योगी हो गये, उनके बाद भी हो गये, अभी भी कहीं होंगे। सबके सामर्थ्य का उद्गम-स्थान तो अंतरात्मा-परमात्मा है। धर्म से वृत्ति सात्त्विक होती है, भक्ति से वृत्ति भगवदाकार होती है, योग से वृत्ति उसमें (आत्मदेव में) ठहरती है, इसलिए सामर्थ्य आता है और ज्ञान से समर्थ तत्त्व का बोध हो जाता है तो वृत्ति सर्वव्यापक ब्रह्म में प्रतिष्ठित हो जाती है। फिर वृत्ति से निवृत्त होकर वह परब्रह्म-परमात्मा में लीन हो जाता है, मुक्त हो जाता है, जीवन्मुक्त हो जाता है।

सामर्थ्य का उद्गम-स्थान : अंतरात्मा

योगी गोरखनाथजी जयंती
१ फरवरी

गोरखनाथजी नेपाल से वापस जा रहे थे । नीलकंठ की यात्रा करके लौटे हुए नेपालियों को पता चला कि गोरखनाथजी यहाँ हैं तो उनको दर्शन करने की उत्सुकता हुई ।

उस समय नेपाल-नरेश महेन्द्र देव इतना धर्मांध हो गया था कि सनातन धर्म को अपनी मति के अनुसार तुच्छ मानने लगा और अत्याचार करने लगा था । वह मत्स्येन्द्रनाथजी के शिष्यों पर बड़ा जुल्म करता था ।

शिष्यों ने गोरखनाथजी को अपनी पीड़ा, व्यथा और उसके अत्याचार के कुछ प्रसंग सुनाये । योगी गोरखनाथ ने कहा : ''अच्छा, चलो ।''

पाटन नगर के समीप भोगवती नदी के किनारे गोरखनाथजी आसन जमाकर बैठ गये । बोले : ''मैं आसन लगाकर बैठा हूँ । जब तक मैं बैठा रहूँगा, पूरे नेपाल में वर्षा नहीं होगी और बिना कारण मैं उठूँगा नहीं ।''

राजकोष खाली होने लगा । प्रजा त्राहिमाम् पुकारने लगी । महेन्द्र के प्रति प्रजा का रोष बढ़ने लगा । महेन्द्र भी चिंतित होने लगा । उसने राजज्योतिषी को बुलाया, मंत्रियों को बुलाया ।

ज्योतिषी ने विचार करके कहा : ''महाराज ! आप योगी मत्स्येन्द्रनाथजी के शिष्यों पर जुल्म करना बंद कर दीजिये । उनके शिष्य गोरखनाथजी भोगवती नदी के तट पर आसन जमाये बैठे हैं । जब तक वे बैठे रहेंगे, तब तक वर्षा नहीं होगी और वे धाक-धमकी से उठें, यह तो सम्भव ही नहीं है ।''

''मानो कि हमने अत्याचार बंद कर दिया, फिर भी उनको उठाने के लिए कुछ तो करना पड़ेगा !''

''आप उनके गुरुदेव की मूर्ति बनवाइये और रथ में बड़े आलीशान ढंग से उनकी शोभायात्रा निकलवाइये । वह रथ वहाँ से गुजरे जहाँ गोरखनाथजी बैठे हैं ।'' यह बात राजा को पसंद आ गयी । रथ में मत्स्येन्द्रनाथजी की मूर्ति सजायी और लगा दिये जयघोष करनेवाले आदमी । सवारी जब गोरखनाथजी के करीब पहुँची तो जयघोष ने और जोर पकड़ा : 'योगसम्राट मत्स्येन्द्रनाथ भगवान की जय हो ! जय हो !...'

अपने गुरु का जयघोष सुनकर कौन शिष्य चुप बैठेगा ! गोरखनाथजी ने देखा कि 'गुरुदेव की शोभायात्रा इतनी धूम-धाम से !' वे भूल ही गये कि 'मेरे को बैठे रहना है ।' उठे, नजदीक गये और साष्टांग दंडवत् प्रणाम किया ।

उनका आसन से उठना हुआ कि मेघ छा गये । मूसलधार वर्षा हुई । महेन्द्र को अपने कृत्यों पर बड़ी लज्जा आयी और वह गोरखनाथजी के चरणों में गिर पड़ा कि ''महाराज ! मैंने गलती की । अब से गुरु मत्स्येन्द्रनाथजी के शिष्यों और आपके शिष्यों पर अत्याचार नहीं होगा, मैं वचन देता हूँ ।''

गोरखनाथजी चल दिये । फिर नेपाल के पर्वत की खोह (गुफा) में जाकर १२ साल वहाँ रहे ।

खूब बरसात हुई । कोष फिर से भर गया । नेपाल-नरेश को धन का मद हो गया तो उसने मत्स्येन्द्रनाथजी के शिष्यों को पुनः सताना चालू कर दिया । जब यह समाचार गोरखनाथजी को मिला तो उन्हें नेपाल-नरेश पर बड़ा क्रोध आया । उस समय उनकी सेवा में एक वृद्धा माई अपने पुत्र के साथ रहती थी । बेटे का नाम था बलवंत । गोरखनाथजी ने कहा : ''अच्छा, यह वचन देकर भी ऐसा करता है ! बलवंत ! इस तालाब की चिकनी मिट्टी लेकर तू हजारों की संख्या में पुतले तैयार कर । मैं तुझे राजा बनाना चाहता हूँ ।''

बलवंत लगा पुतले बनाने में । उसने हजारों की संख्या में पुतले बनाये । गोरखनाथजी ने उन पुतलों में संजीवनी विद्या से प्राण प्रतिष्ठित कर दिये और पुतलों की सेना तैयार हो गयी । भभूत अभिमंत्रित करके बलवंत के ललाट पर उसका लेप कर दिया । बलवंत का शरीर भी दिव्य हो गया, राजकुमार जैसा शोभनीय हो गया । गोरखनाथजी बोले : ''हे वत्स ! अब नेपाल-नरेश पर चढ़ाई कर । यह तेरी सेना है । अब देर मत कर और तेरी विजय होगी, इसमें संदेह मत करना ।''

बलवंत ने एकाएक धावा बोल दिया । हालाँकि नेपाल-नरेश के पास बहुत सेना थी लेकिन यहाँ गोरखनाथजी का संकल्प भी काम कर रहा था । देखते-ही-देखते महेन्द्र की सेना परास्त हो गयी और वह घबराया । उसने मंत्रियों से पूछा : ''अब क्या होगा ?''

बोले : ''आपने उनको वचन दिया कि नहीं सताऊँगा । फिर भी मत्स्येन्द्रनाथजी के शिष्यों पर जुल्म बढ़ गये तो वे नाराज हो गये । अब तो उन्हींकी शरण है, और क्या !''

आया भागता-भागता : ''त्राहिमाम्... मैं आपका दास, आपकी शरण हूँ, मुझे माफ करो ।''

बोले : ''बार-बार तू गलती करता रहे और बार-बार हम माफी देते रहें, यह सम्भव नहीं है । प्रजा का पालन करना है कि प्रजा का उत्पीड़न करना है ?''

''महाराज ! अब मैं ठीक से पालन करूँगा, मतभेद नहीं रखूँगा । मेरे ऊपर कृपा करो । मेरे राज्य में आपके बलवंत की सेना ने डेरा डाल दिया है । आप ही आज्ञा करेंगे तब सेना हटेगी ।''

''हम आज्ञा नहीं करते । वही राज्य करेगा ।''

''महाराज ! कृपा करो । मैं भी आपका बालक हूँ, दास हूँ । अब बुढ़ापे में कहाँ जाऊँगा ? मेरे को तो कोई संतान भी नहीं है । अब दर-दर की ठोकर खाऊँगा ।''

वह रोया, गिड़गिड़ाया । संत तो दयालु होते हैं । बोले : ''मैं तो बलवंत को वचन दे चुका हूँ कि तू नेपाल का राजा बनेगा ।''

''महाराज ! ऐसा कोई उपाय निकालिये कि आपका वचन भी भंग न हो और मेरा राज्य भी न जाय ।''

''उपाय यह है कि इसको तुम गोद (दत्तक) ले लो । तुम्हारे बाद यह उत्तराधिकारी बन जाय ।''

''महाराज ! यह तो बढ़िया बात है ।''

राजा ने बलवंत को गोद ले लिया । थोड़े दिन में राजा मर गया । बलवंत आ गया गुरु के चरणों में : ''गुरुदेव क्या आज्ञा है ?''

''देख बलवंत ! गुरु मत्स्येन्द्रनाथजी का जयघोष करते हुए तेरी सेना गयी तो विजयी हो गयी । जा ! जब तक तेरे कुल में, तेरे राज्य-वंश में गुरु मत्स्येन्द्रनाथजी की पूजा होती रहेगी, गुरु और (शेष पृष्ठ ३३ पर)

बल व स्मरणशक्ति वर्धक प्रयोग

(१) रात को २-४ बादाम पानी में भिगो दें । सुबह छिलके उतारकर १-२ काली मिर्च और मिश्री मिलाकर खूब महीन पीस लें । इसे सुबह खाली पेट लेने से बुद्धि, स्मरणशक्ति तथा शारीरिक शक्ति में वृद्धि होती है । इससे नेत्रज्योति भी बढ़ती है।

(२) १००-१०० ग्राम बादाम, किशमिश, छुहारा, सूखा नारियल तथा ४०० ग्राम भुने चने और ८०० ग्राम मिश्री सभीको पीसकर रख लें । २० से ५० ग्राम रोज नाश्ते में खिलाने से बालक बलवान बनते हैं तथा उनकी याददाश्त व बौद्धिक क्षमता में वृद्धि होती है।

आँतों की शुष्कता मिटायें, कब्जियत भगायें

कब्ज कई प्रकार की बीमारियों की जड़ है। इसके रोगियों को रोजाना विरेचक औषधियाँ लेने की आदत पड़ जाती है, जिससे उनकी आँतें शुष्क हो जाती हैं। ५ से १० बूँद बादाम का तेल दूध में डालकर रात्रि को (सोने से कम-से-कम १ घंटा पहले) पीने से आँतों की शुष्कता तथा कब्जियत दूर होती है।

मानसिक रोगों का घरेलू उपचार

सौंफ, बादाम, गुलाब के सूखे फूल, खसखस, काली मिर्च - सभी समान मात्रा में लेकर पीस लें और आवश्यकतानुसार मिश्री मिलाकर रख लें । सुबह १ चम्मच मिश्रण पानी में घोलकर सेवन करें । साथ में सुबह ५-५ बूँद देशी गाय का घी दोनों नथुनों में डालें। इससे सभी प्रकार के मानसिक रोगों में लाभ होता है।

स्वास्थ्य के घरेलू सरल उपाय

✻ **आधासीसी :** १२ ग्राम पुराना गुड़ ६ ग्राम देशी घी के साथ सूर्योदय से पहले तथा शाम को सूर्यास्त से पहले खाने से आधे सिर के दर्द में आराम मिलता है।

✻ **बच्चों का कृमि-रोग :** बच्चों को रात को सोने से पहले १ अखरोट खिलाकर गुनगुना पानी पिलायें। पेट के कीड़े पाखाने के साथ निकल जाते हैं।

✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻

वीर्यरक्षक व पुष्टिवर्धक गोखरू

वीर्यक्षीणता, स्वप्नदोष, शीघ्रपतन व दुर्बलता आदि समस्याओं में गोखरू विशेष लाभदायी है । बल-वीर्य व मांस वर्धक होने के साथ यह शौच साफ लाता है। यह गुर्दे व मूत्र संबंधी रोगों को दूर करता है तथा प्रमेह (गोनोरिया), सुजाक, शोथ (सूजन) एवं हृदय-विकारों में लाभकारी है।

✻ १००-१०० ग्राम गोखरू, शतावरी तथा तालमखाना का चूर्ण और ३०० ग्राम पिसी मिश्री मिलाकर रख लें । १-१ चम्मच मिश्रण दूध के साथ सुबह-शाम लेने से शीघ्रपतन व वीर्यक्षीणता दूर होती है तथा शरीर हृष्ट-पुष्ट बनता है।

रसायन चूर्ण व टैबलेट

गोखरू, आँवला तथा गिलोय को समभाग मिलाकर यह विशेष रसायन योग बनाया जाता है । यह चूर्ण पौष्टिक, बलप्रद, खुलकर पेशाब लानेवाला एवं वीर्यदोष दूर करनेवाला है । जीर्णज्वर तथा धातुगत ज्वर दूर करता है । उदर रोग, आँतों के दोष, मूत्रसंबंधी विकार, स्वप्नदोष तथा धातुसंबंधी बीमारियों में लाभ करता है । पाचनतंत्र, नाड़ीतंत्र तथा ओज-वीर्य की रक्षा करता है । छोटे-बड़े, रोगी-निरोगी सभी इसका सेवन कर सकते हैं । रसायन चूर्ण बड़ी उम्र में होनेवाली व्याधियों का नाश करता है । शक्ति, स्फूर्ति एवं ताजगी तथा दीर्घ जीवन देनेवाला है । ४० वर्ष की उम्र से बड़े प्रत्येक व्यक्ति को तो निरोग रहने हेतु हररोज इसका सेवन विशेष रूप से करना चाहिए । यह 'रसायन चूर्ण' के नाम से सभी संत श्री आशारामजी आश्रमों तथा सेवाकेन्द्रों पर उपलब्ध है ।

अमृत द्रव

यह एक बहुत ही असरकारक औषधि है । इसके प्रयोग से सर्दी-जुकाम, खाँसी, सिरदर्द तथा गले एवं दाँत के रोगों में लाभ होता है ।

प्रयोग विधि : २ से ५ बूँद (बच्चों के लिए १-२ बूँद) दवा १ कप गुनगुने पानी में डालकर सुबह-शाम पियें ।

मौत के मुख से वापसी

सितम्बर २०१४ को मैं अपनी कार द्वारा अहमदाबाद से नड़ियाद जा रहा था । बहुत तेज बारिश हो रही थी इसलिए सेंटर लॉक और पावर विंडो सब अंदर से बंद किये हुए थे । सड़क पर आधा फुट पानी भर गया था । आगे मोड़ है, इसकी जानकारी नहीं होने की वजह से मैं गाड़ी सीधी चलाता गया, जिससे गाड़ी एक १०-१२ फुट गहरे तालाब में जा गिरी और तैरने लगी । धीरे-धीरे पानी अंदर आने लगा और गाड़ी डूबने लगी । सेंटर लॉक और पावर विंडो होने के कारण न दरवाजा खुले, न खिड़की ! १० मिनट तक बाहर निकलने की कोशिश की पर असफल रहा । ७५-८० प्रतिशत गाड़ी पानी से भर चुकी थी । मुझे मौत सामने दिखने लगी । मैं गाड़ी के पिछले भाग में आकर बापूजी को पुकारने लगा । पानी मेरी नाक तक आ गया । मैं गुरुमंत्र जपने लगा । तभी अचानक पिछला दरवाजा झटके से खुल गया । मैं गाड़ी के ऊपर चढ़ गया और पूरी गाड़ी डूब गयी । आधे घंटे बाद गाँववालों ने आकर मुझे वहाँ से निकाला ।

उस समय मुझे याद आया कि आज से डेढ़ साल पहले सपने में पूज्य बापूजी ने कहा था कि 'बेटा ! तेरी आयु बहुत कम बची है ।' मैं यह सुनकर घबरा गया और प्रार्थना की : 'गुरुदेव ! इससे बचने का कोई तो उपाय होगा !' तो सपने में ही बापूजी बोले : 'तू रात को सोते समय शशकासन में प्रणाम करके सोया कर ।' तब से मैं रोज २-३ मिनट तक शशकासन (वज्रासन में बैठकर नीचे झुक के प्रणाम की मुद्रा में दोनों हाथ जोड़कर सिर जमीन पर रखना) करके सोता हूँ । गुरुदेव की कृपा से मेरी मौत के मुख से वापसी हुई ।

– मयूर प्रजापति, अहमदाबाद , सचल दूरभाष : ९८२५५५५९८५

३० साल पुरानी सर्दी से मुक्ति

मैं बचपन से ही जुकाम से भयंकर रूप से पीड़ित था। मुझे लगातार छींकें आती रहती थीं। मैंने हर तरह के इलाज कराये पर इस बीमारी से निजात नहीं मिली। मौसम या तापमान में जरा-सा भी परिवर्तन होने पर मेरे स्वास्थ्य पर इसका बड़ा प्रतिकूल असर पड़ता और मैं सर्दी व छींकों से परेशान हो जाता था। मैं इस समस्या से करीब ३० साल से परेशान था। सौभाग्य से संत श्री आशारामजी बापू के एक शिष्य नितिन सिंगला, जो मेरे साथ काम करते थे, उनको मेरी इस बीमारी के बारे में पता चला तो उन्होंने कहा कि ''आप आश्रम द्वारा निर्मित 'होमियो तुलसी गोली' लीजिये और आसन-प्राणायाम कीजिये।''

मैंने होमियो तुलसी की गोलियाँ खानी शुरू कीं और कुछ ही महीनों में मेरी ३० साल पुरानी बीमारी में आराम हो गया। मैंने अंग्रेजी दवाइयाँ लेना बिल्कुल बंद कर दिया है। होमियो तुलसी गोलियों के और भी बहुत सारे फायदे हैं। भूख जगानेवाली और रोग मिटानेवाली ये गोलियाँ आश्रम व गौशाला की पवित्र भूमि पर तुलसी उगाकर उससे बनायी जाती हैं। इनको बनानेवाले वैद्यों का मैं आभारी हूँ। ये बहुत सारी बीमारियों को जड़ से हटाने में सक्षम हैं। दीर्घ जीवन देनेवाली ये गोलियाँ बच्चे, युवा, वृद्ध, रोगी, निरोगी - सभीके लिए वरदानरूप हैं। (५ साल से कम उम्र के बच्चे १ गोली दिन में ३ बार तथा अन्य सभी २-३ गोलियाँ दिन में ३ बार चूस सकते हैं।)

मैं इसके लिए संत श्री आशारामजी बापू का तहेदिल से शुक्रिया अदा करता हूँ। उनके चरणों में सादर प्रणाम !

- डी. गुणा सेखर, वरिष्ठ प्रबंधक, टाटा मोटर्स, अहमदाबाद

कुप्रचार की आँधी भी हमें न रोक पायी

सितम्बर २०१३ के बाद कुप्रचार की भ्रामक खबरों की वजह से कुछ लोग 'ऋषि प्रसाद' का सदस्य बनना नहीं चाहते थे। तब हमने सोचा, यह परीक्षा का समय है, सच्चाई लोगों तक पहुँचाना हमारा परम कर्तव्य है। हमने संकल्प लिया कि हम रोज नये इलाकों में जायेंगे और सुप्रचार की सेवा करेंगे।

कई बार हमें अप्रैल-मई की चिलचिलाती धूप में ४-४, ५-५ कि.मी. चलना पड़ता लेकिन हम सबमें इतना उत्साह था कि वह प्रतिकूलता और कुप्रचार हमें गुरुसेवा से नहीं रोक सके। हम रोज 'ऋषि प्रसाद' के लगभग २५ सदस्य बनाते थे।

पूज्य बापूजी को झूठे आरोपों में फँसाया गया है, इस सच्चाई को ज्यादातर लोग तो एक बार समझाने से ही समझ जाते परंतु कुछ काफी देर बाद समझते। कुछ ऐसे भी मिले जिनको पता था कि मीडिया जो भी दिखा रहा है वह गलत है लेकिन सच्चाई मालूम नहीं थी। सच्चाई मालूम पड़ने पर वे भी सदस्य बन जाते और कुछ तो हमारे साथ सेवा भी करने लग जाते। इस तरह अप्रैल से अगस्त तक मैंने ५२५ सदस्य बनाये और मेरा यह अभियान अभी भी जारी है। मेरा सभी सेवाधारियों से निवेदन है कि हम अपनी तरफ से पुरुषार्थ करें, सदस्य तो बापूजी की कृपा से अपने-आप बन जाते हैं। 'ऋषि प्रसाद' की सेवा करने से मेरा पूरा परिवार आर्थिक सम्पन्नता, शारीरिक स्वास्थ्य व मानसिक शांति का अनुभव कर रहा है और मुझे अत्यंत आत्मिक आनंद मिल रहा है।

- श्रीमती अरुणा सतीश वाघमारे औरंगाबाद (महा.) सचल दूरभाष : ९८९०१८१६०४

संकीर्तन यात्राएँ व प्रभातफेरियाँ

सरोरा (जम्मू) में गीता जयंती पर बच्चों ने कीर्तन करते हुए गाँव की परिक्रमा की । इंदौर, सागर (म.प्र.), कानपुर (उ.प्र.), चिरमिरी (छ.ग.), परतवाड़ा जि. अमरावती (महा.), बड़ौदा (गुज.), बाड़मेर (राज.), हैदराबाद में प्रभातफेरियाँ तथा मांजलपुर-बड़ौदा, जम्मू, कोरापुट (ओड़िशा), भाबरा जि. अलीराजपुर, जबलपुर, देवास (म.प्र.), भिलाई जि. दुर्ग, बिलासपुर (छ.ग.), पठानकोट, मुकेरियाँ (पंजाब), अमरावती (महा.) आदि में कीर्तनयात्राएँ निकाली गयीं और सत्साहित्य बाँटा गया।

'युवा सेवा संघ' ने इस प्रकार मनायी गीता जयंती

'युवा सेवा संघ' द्वारा रायपुर (छ.ग.) में रेलवे स्टेशन के बाहर लोगों को गीता आधी कीमत पर दी गयी तथा देशी गाय व गौ-उत्पादों की महत्ता बतायी गयी, साथ ही हलकी पुस्तकों के बदले गीता पढ़ने के लिए प्रेरित किया गया। औरंगाबाद (महा.) में पुलिस विभाग एवं उच्च अधिकारियों में गीता का वितरण तथा भिलाई (छ.ग.) के विद्यालयों में गीता-ज्ञान का प्रचार किया गया । रायपुर (छ.ग.), कानपुर, प्रयागराज, गाजियाबाद (उ.प्र.) आदि में शोभायात्राएँ निकाली गयीं तथा मथुरा में गरीबों में भंडारा हुआ।

नई दिल्ली में विशाल संकीर्तन यात्रा निकाली गयी एवं प्रसाद-वितरण किया गया । यात्रा में गीता-ज्ञान पर आधारित सत्साहित्य, ऋषि प्रसाद, लोक कल्याण सेतु, 'जागो हिन्दुस्तानी' वीसीडी आदि सुप्रचार सामग्री बाँटी गयी।

'महिला उत्थान मंडल' ने मनाया गीता जयंती महोत्सव

अहमदाबाद में 'महिला उत्थान मंडल' ने 'गौ-गीता जागृति यात्रा' निकाली। लखनऊ के विद्यालयों में 'गीता-ज्ञान व गौ-ज्ञान प्रतियोगिता' का आयोजन हुआ । विजेताओं को पुरस्कार के रूप में स्वास्थ्यप्रद, पवित्र गौ-उत्पाद, जैसे - गौसेवा फिनायल, गोझरण वटी, गोझरण अर्क आदि दिये गये। दाहोद (गुज.) में 'महिला संस्कार सभा', सूरत में 'नारी शक्ति जागृति यात्रा', वापी (गुज.) में 'महिला सर्वांगीण विकास शिविर' तथा सिरसागंज (उ.प्र.) में 'गीता-ज्ञान प्रतियोगिता' आयोजित हुई। इंदौर में गरीबों को भोजन कराया गया।

विविध सेवाकार्यों की एक झलक

दाता तालाब (जम्मू-कश्मीर) में लंगर लगाया गया व सत्साहित्य बाँटा गया। जम्मू के कई स्थानों पर सामूहिक श्री आशारामायण पाठ, कीर्तन, गीता प्रचार, प्रार्थना आदि विभिन्न कार्यक्रम हुए। आदिवासी क्षेत्र ग्राम मांडलीनाथू जि. अलीराजपुर (म.प्र.) में भंडारा हुआ।

चन्द्रपुर (महा.) में संत-सम्मेलन हुआ। अमरावती में गौ-रक्षा हेतु जिलाधिकारी को ज्ञापन दिया गया। कोलक जि. वलसाड़ (गुज.) में प्रभातफेरी निकाली गयी व गरीबों में अनाज-वितरण हुआ। पिपरौद, राजिम में 'सुप्रचार संकीर्तन यात्रा' तथा हैदराबाद में 'गौ-रक्षा संकीर्तन यात्रा' निकाली गयी। रायपुर (छ.ग.) में सरोरा, बीरगाँव, उरला, अमलीडीह, फुंडहर, धरमपुरा, लालपुर आदि जगहों में गौमाता की पूजा कर प्रदक्षिणा की गयी एवं गोग्रास खिलाया गया। बाल संस्कार केन्द्रों के बच्चों ने वृक्षारोपण किया। वघई जि. डांग (गुज.) में निःशुल्क चिकित्सा शिविर हुआ। धार (म.प्र.) के कारागृह में सत्संग का आयोजन हुआ। हैदराबाद में अनाज एवं वस्त्रों का वितरण तथा भंडारा किया गया। बाघा बॉर्डर (पंजाब) पर सुप्रचार साहित्य का वितरण हुआ।

कपूरथला, अमृतसर, जालंधर, बटाला, तलवाड़ा, फगवाड़ा (पंजाब) में राष्ट्र जागृति यात्राएँ निकाली गयीं। जम्मू में प्रोजेक्टर के माध्यम से विडियो सत्संग दिखा के सुप्रचार किया गया। लातूर (महा.) में 'ऋषि प्रसाद सम्मेलन' का आयोजन हुआ। जंतर-मंतर, दिल्ली में ५०१ दिन से सतत धरना चालू है।

गर्म कपड़ों व कम्बलों का वितरण

ग्वालियर आश्रम (म.प्र.) द्वारा आसपास के बसई, निर्मानी, भवेढ़, गुरावल, भागगढ़, तलोथरा, बम्हारी, रामपुरा, सपेरों का पुरा, मढ़ा, आदिवासीपुरा आदि अत्यंत गरीब इलाकों में कम्बल, खजूर, 'सत्यमेव जयते, नशे से सावधान' सत्साहित्य आदि का वितरण हुआ तथा भगवन्नाम-कीर्तन कराया गया। लखनऊ, पेटलावद (म.प्र.), काशीपुर (उत्तराखंड), जामनगर (गुज.), लड्डूगाँव (ओड़िशा) के गरीबों में कम्बल तथा अलीगढ़ (उ.प्र.) के गरीब बच्चों में स्वेटर वितरण किया गया। मैनपुरी (उ.प्र.) में वृक्षारोपण हुआ। रायझरण, बालीगुड़ा जि. अनगुल तथा अनगुल आश्रम (ओड़िशा) में गरीबों को कम्बल बाँटे गये और भंडारा हुआ। सुसनेर (म.प्र.) में भंडारा हुआ। पिल्लोनिगुड़ा जि. रंगारेड्डी (तेलंगाना) के गरीबों में अनाज व कम्बल वितरण एवं भंडारा किया गया तथा तन-मन को स्वस्थ रखने के उपाय बताये गये। विद्यार्थियों को सूर्यनमस्कार, प्रातः-जागरण, तुलसी-पत्तों के सेवन, प्राणायाम व माता-पिता को प्रणाम करने की सीख दी गयी तथा उनमें नोटबुक एवं प्रसाद वितरण हुआ।

आरोग्य, बुद्धि व प्रसन्नता प्रदायक पर्व के रूप में उभरा 'तुलसी पूजन दिवस'

छिंदवाड़ा (म.प्र.) | राजकोट (गुज.) | मुकेरियाँ (पंजाब) | मालेगाँव, जि. नासिक

सणखला, जि. द्वारका (गुज.) | बीजापुर (कर्ना.) | भीलवाड़ा (राज.) | मैनपुरी (उ.प्र.)

खड़गपुर (प.बंगाल) | पुट्टनहल्ली-बैंगलोर | कटनी (म.प्र.) | मालपुरा, जि. टोंक (राज.)

जामनगर (गुज.) | जालंधर (पंजाब) | जयपुर (राज.) | पंचेड़ (म.प्र.)

वलसाड़ (गुज.) | हाथरस (उ.प्र.) | चंडीगढ़ | बोरसी, जि. दुर्ग (छ.ग.)

गोंदिया (महा.) | फिरोजपुर (पंजाब) | बाड़मेर (राज.) | अम्बाला (हरि.)

कानपुर (उ.प्र.) | हिम्मतनगर (गुज.) | बोईसर, जि. ठाणे (महा.) | पटियाला (पंजाब)

जप-माला पूजन कर साधकों ने लिया साधना में आगे बढ़ने का संकल्प

ऋषि प्रसाद सम्मेलन, लातूर (महा.)

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/sewa देखें।

आश्रम, समितियाँ एवं साधक परिवार अपने सेवाकार्यों की तस्वीरें sewa@ashram.org पर ई-मेल करें।

सम्पर्क : अहमदाबाद मुख्यालय - (०७९) ३९८७७७३२

सभी संत श्री आशारामजी आश्रमों में तथा श्री योग वेदांत सेवा समितियों एवं साधक-परिवारों के सेवाकेन्द्रों पर उपलब्ध।